साईं सृजन पटल

Website : www.sainsrijanpatal.com

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

मासिक ई-पत्रिका

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

वर्ष-2 अंक-14 सितम्बर- 2025 पृष्ठ-28 निःशुल्क

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी–263139 (नैनीताल)

Email: highereducation.director@gmail.com

संदेश

अर्द्धशासकीय पत्रांकः 3338/2025–26 दिनांक 10 सितम्बर 2025

अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि **'साईं सृजन पटल'** अपनी मासिक पत्रिका के माध्यम से उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक पर्यटन, लोक कथा,नृत्य, व्यंजन,पर्यटन, साहसिक पर्यटन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर युवाओं, शोधार्थियों, कलाकारों एवं नवोदित लेखकों की प्रतिभाओं का सार्थक उपयोग कर रहा है।

'साईं सृजन पटल' अब डिजिटल हो चुका है,जिस कारण उत्तराखंड की संस्कृति देश–विदेश में देखी–पढ़ी जा रही है। पाठक इसमें बढ़–चढ़ कर रुचि ले रहे हैं। इसका श्रेय पत्रिका के सूत्रधार प्रो.(डॉ.) के.एल.तलवाड़ जी को ही जाता है, जिनके अथक प्रयास और उत्तराखंड प्रेम के कारण यह संभव हो पा रहा है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि पत्रिका ऐसे ही उत्तराखंड को अपने लेखों और संस्मरणों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय फलक पर स्थापित करेगी।

मंगलकामनाओं सहित। 10-9-25

प्रो.(डॉ.) वी.एन.खाली
निदेशक उच्च शिक्षा

सम्पादकीय

सितंबर का महीना प्रतिभाओं को पुरस्कृत करने और सम्मानित होने का समय रहा है। राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान, प्रदेश का प्रतिष्ठित तीलू रौतेली पुरस्कार, स्पर्श गंगा शिक्षा श्री पुरस्कार, लेखक गांव सृजन सम्मान, उद्यमिता उत्कृष्टता सम्मान, शिल्प रत्न पुरस्कार व एनएसएस सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी साईं सृजन सम्मानों से प्रदेश की प्रतिभाएं नवाजी गई। अपने सुधी पाठकों को इन प्रतिभाओं के कार्यों से अवगत कराने का प्रयास इस अंक में प्रमुखता से रहा है। हिमालय दिवस और हिन्दी दिवस पर सारगर्भित लेखों के साथ ही धार्मिक आस्था से जुड़े चितई के गोलू देवता,पांचवां धाम श्री बूढ़ाकेदार, भगवान रुद्रनाथ, बटर फेस्टिवल व जौनसार–बावर का जागड़ा पर्व भी इस अंक की पाठ्य सामग्री में सम्मिलित हैं। रामनगर कॉलेज की एनसीसी कैडेट ने कजाकिस्तान में यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम में सम्मिलित होकर प्रदेश का मान बढ़ाया है। स्पेक्स संस्था के वैज्ञानिक डॉ.बृजमोहन शर्मा ने अपने लेख के माध्यम से मिलावट को जानने और परखने की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत गणेश खुगशाल गणी जी व माटी के लाल मोहन पाल पर भी लिखा गया है।नशामुक्ति और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति भी लेखकों ने आगाह किया है। प्रदेश के उच्च शिक्षा निदेशक प्रो.वी.एन.खाली जी ने 'साईं सृजन पटल' कार्यालय का अवलोकन कर हमारी टीम का उत्साहवर्धन किया है।

प्रो. (डॉ.) के. एल. तलवाड़

साईं सृजन पटल
मासिक ई-पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक

प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो.- 9412142822
ई-मेलः sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक

अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक

अमन तलवाड़
मो. 7300883189

द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ. मंजू कोगियाल, असि. प्रो. हिन्दी
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण साहित्यकार

आवरण पृष्ठ

पृष्ठभूमि में चिन्यालीसौड़ (उत्तरकाशी) झील,इन्सेट में वीरबाला तीलू रौतेली की प्रतिमा,एनसीसी कैडेट अंजलि गोस्वामी, डिंड्याली होम स्टे में पत्रिका विमोचन एवं दयारा बुग्याल में बटर फेस्टिवल की झलक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

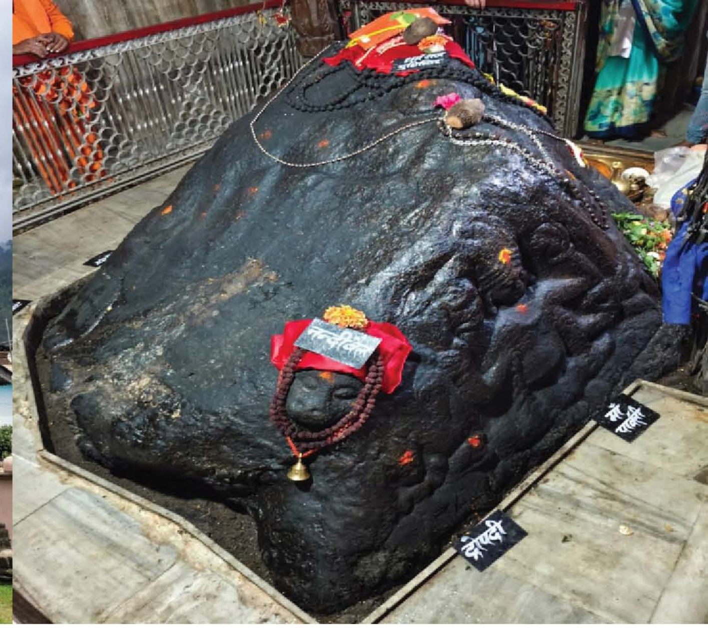

आस्था

उत्तराखंड का पांचवां धामः श्री बूढ़ा केदार

उत्तराखंड के चार धामों बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री के साथ ही 'श्री बूढ़ा केदार' को पांचवां धाम माना जाता है। बूढ़ा केदार का अर्थ है – बूढ़े रूप में भगवान शिव। किंवदंतियों के अनुसार, महाभारत काल में पांडव भगवान शिव की आराधना करने यहां आये थे और भगवान शिव ने उन्हें अपने वृद्ध रूप में दर्शन दिए थे। श्री बूढ़ा केदारनाथ मंदिर जनपद टिहरी गढ़वाल के भिलंगना विकासखंड के मुख्य बाजार चमियाला से 17 किलोमीटर दूर बाल गंगा और धर्म गंगा के संगम धर्मप्रयाग में अवस्थित है।

बूढ़ा केदारनाथ मंदिर की समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 1535 मीटर है। बूढ़ा केदारनाथ मंदिर का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह मंदिर आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित किया गया था,जो एक महान हिन्दू धर्म शास्त्री और दार्शनिक थे। मंदिर निर्माण आठवीं शताब्दी में किया गया था। मंदिर निर्माण के पीछे एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव ने यहां एक बूढ़े ऋषि के रूप में वास किया था। यह स्थान हिन्दू धर्म अनुयाइयों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

मंदिर के दर्शन और पूजा–अर्चना करने से भक्तों को आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति होती है। मंदिर में प्रत्येक वर्ष कई त्योहारों का आयोजन किया जाता है,जिनमें शिवरात्रि,नवरात्रि और दीपावली प्रमुख हैं। मंदिर के पुजारी प्रभु नाथ जी के अनुसार जब पांडवों ने अपने वनवास के दौरान हिमालय की यात्रा की तो उन्होंने भगवान शिव की आराधना करने के लिए एक सुंदर और शांति स्थल की तलाश की और इस स्थल का चयन किया। इस मंदिर में उत्तर भारत का सबसे बड़ा शिवलिंग है। शिवलिंग शिला रूप में स्थापित है,जिस पर द्रोपदी सहित पांचों पांडवों की आकृतियां अंकित हैं। वर्तमान में मंदिर का जीर्णोद्धार का कार्य गतिमान है। मंदिर को बाबा केदारनाथ मंदिर की तर्ज पर तैयार किया जा रहा है।

प्रस्तुति–
डॉ. हरीश चंद्र रतूड़ी ,
विभागाध्यक्ष वाणिज्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग,(चमोली)

उल्लेखनीय कार्य करने वाली 13 महिलाओं को मिला 'तीलू रौतेली पुरस्कार'

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने 4 सितंबर को राजधानी देहरादून के आईआरडीटी सभागार में आयोजित समारोह में उत्तराखंड की विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली राज्य के सभी जनपदों की 13 महिलाओं को तीलू रौतेली पुरस्कार से सम्मानित किया। इन महिलाओं को इस सम्मान के अंतर्गत 51 हजार रुपए, स्मृति चिन्ह व प्रशस्तिपत्र प्रदान किये गये। पुरस्कार प्राप्त करने वाली महिलाएं–**हेमा नेगी करासी**–रुद्रप्रयाग जनपद के दशज्यूला क्षेत्र के तुखिंडा गांव में जन्मी हेमा ने लोक गायन के क्षेत्र में विशेष पहचान बनाई है। **रुमा देवी**–हरिद्वार जिले के औरंगाबाद निवासी किसान की दिव्यांग बेटी ने विभिन्न खेलों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्तराखंड और देश का प्रतिनिधित्व किया। **अलिशा मनराल**–बागेश्वर जनपद की 12वीं कक्षा की छात्रा अलिशा ने ताइक्वांडो की नेशनल प्रतियोगिता में दो स्वर्ण सहित आठ पदक जीते।

मीरा उपाध्याय–अल्मोड़ा जाखन देवी निवासी मीरा महिलाओं के सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में अद्भुत योगदान दे रही हैं। **नैना अधिकारी**–नैनीताल जिले से स्टेनले कंपाउंड निवासी नैना अंतरराष्ट्रीय स्तर की,भारत की पहली क्याकिंग खिलाड़ी हैं। वह लड़कियों को निशुल्क प्रशिक्षण भी दे रही हैं। **रेशमा देवी**– पौड़ी के डूंगरी गांव की रेशमा देवी पिछले डेढ़ दशक से सामाजिक क्षेत्र में आना योगदान दे रही है। **विजय लक्ष्मी जोशी**–उत्तरकाशी जनपद के नौगांव विकास खंड के तुनाल्का गांव की विजय लक्ष्मी ने वर्ष 2002 में दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष स्कूल की स्थापना की। **सुरभि खनेड़ा**–गोपेश्वर चमोली की सुरभि ने साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई। **रेखा भट्ट**–पिथौरागढ की घुनसेरा मदखदायत निवासी रेखा लंबे समय से महिला उद्यमियों के समूह के लिए उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। **अनामिका बिष्ट**–चंपावत जिले के लोहाघाट की अनामिका ने जुलाई 2025 में कोलंबो में कराटे प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल किया। **रेखा**– यू.एस.नगर जनपद के दिनेशपुर के तिलपुरी निवासी रेखा ने 2025 में फर्स्ट एशियन पैरा थ्रोबाल चौंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन किया।

शिवानी गुप्ता– देहरादून जनपद की ऋषिकेश निवासी शिवानी कराटे खिलाड़ी हैं। अब तक वह तीन हजार बालिकाओं को प्रशिक्षण दे चुकी हैं। **साक्षी चौहान**–टिहरी जनपद के देवप्रयाग के बगसारी गांव की साक्षी व्हीलचेयर बास्केटबॉल में तीन बार नेशनल स्तर पर गोल्ड मेडल जीत चुकी हैं।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

वीरबाला तीलू रौतेली

उत्तराखंड की झांसी की रानी

8 अगस्त 1661 को श्री भूप सिंह के घर जन्मी, तीलू रौतेली (जो मूल रूप से तिलोत्तमा देवी कहलाती थीं) एक गढ़वाली राजपूत योद्धा और लोक नायिका थीं। वह चौंदकोट (वर्तमान गढ़वाल उत्तराखंड) के गुराड़ तल्ला गांव की रहने वाली थीं। उन्होंने गुरु शीबू पोखरियाल के मार्गदर्शन में घुड़सवारी और तलवारबाजी में महारथ हासिल की थी। तीलू रौतेली को उत्तराखंड की झांसी की रानी भी कहा जाता है।

वह एक ऐसी वीरांगना थी,जो केवल 15 वर्ष की उम्र में रणभूमि में कूद पड़ी थीं और सात साल तक उन्होंने अपने दुश्मन राजाओं को कड़ी चुनौती दी थी। लगभग 20 वर्ष की आयु में वह सात युद्ध लड़ने वाली वीरांगना थी। उनकी वीरता और पराक्रम को शत्–शत् नमन।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

राज्य स्त्री शक्ति

दृष्टि दिव्यांग बच्चों को समर्पित विजय लक्ष्मी जोशी को मिला तीलू रौतेली पुरस्कार

जनपद उत्तरकाशी के नौगांव विकास खंड के ग्राम तुनाल्का की रहने वाली विजय लक्ष्मी जोशी के मन में किशोरावस्था से ही समाज के लिए कुछ कर गुजरने की ललक थी। पहाड़ की इस बेटी को घूमने के दौरान दिव्यांगों की स्थिति देख मन में उनके जीवन को आसान करने की इच्छा हुई। वर्ष वर्ष 2000 में सामान्य बच्चों के लिए स्थापित स्कूल में वर्ष 2007 में दृष्टि दिव्यांग बच्चों को भी सम्मिलित किया। इस तरह विजय लक्ष्मी ने परमार्थ विजय पब्लिक स्कूल खोल कर दृष्टि दिव्यांग बच्चों के जीने की राह आसान की है। स्कूल पूरी तरह से निःशुल्क है। 52 वर्षीया विजय लक्ष्मी वर्षो से इस समाज सेवा के कार्य में जुटी हैं। उनके पति वीरेंद्र दत्त जोशी भी उन्हें भरपूर सहयोग करते हैं। इस समय उनके स्कूल में 65 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इनमें से सभी बेहद गरीब परिवार से ताल्लुक रखते हैं। यह स्कूल आवासीय भी है। दान और लोगों के सहयोग से ही स्कूल चर रहा हे। तमाम कठिनाइयों के बाद भी विजय लक्ष्मी ने इस स्कूल का संचालन जारी रखा हुआ है। उपलब्धि की बात तो यह है कि उनके स्कूल के शिक्षित सात बच्चे सरकारी नौकरियों में है। विजय लक्ष्मी और उनके पति का कहना है कि भले ही उनकी अपनी कोई जैविक संतान नहीं है,लेकिन ये सभी उनके ही बच्चे हैं। विजय लक्ष्मी इस कार्य के लिए जनपद में सम्मानित हो चुकी हैं। इस वर्ष उनहें राज्य स्तरीय **'तीलू रौतेली सम्मान' मिलना गर्व की बात है। उल्लेखनीय है कि विजय लक्ष्मी राजकीय महाविद्यालय बड़कोट में प्रो.के.एल.तलवाड़ की आदर्श विद्यार्थी और राष्ट्रीय सेवा योजना की सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी रही हैं।**

सराहना

उच्च शिक्षा निदेशक प्रो.वी.एन.खाली ने किया 'साईं सृजन पटल' का अवलोकन

उच्च शिक्षा निदेशक प्रो.वी.एन.खाली 27 अगस्त को 'साईं सृजन पटल' के कार्यालय आर.के.पुरम जोगीवाला देहरादून पहुंचे। पटल के संयोजक सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.के.एल.तलवाड ने उनके आगमन पर पुष्प गुच्छ भेंटकर उनका स्वागत किया। उच्च शिक्षा निदेशक ने पटल के कार्यालय में 15 अगस्त 1947 के अखबार, पेपर क्लिपिंग्स की फाइलों, अभिलेखों और प्रशस्तिपत्रों के रख–रखाव का अवलोकन कर मुक्त कंठ से सराहना की। प्रो.तलवाड़ ने इस अवसर पर उन्हें 'लेखक श्री सम्मान' स्मृति चिन्ह भी भेंट किया।

उल्लेखनीय है कि 'साईं सृजन पटल' पत्रिका के जुलाई 2025 अंक में प्रो.खाली का एक लेख 'केदार घाटी की तक्षशिला – श्री उत्तराखण्ड विद्यापीठ का स्वर्णिम अतीत' प्रकाशित हुआ है। इस अंक की प्रति भी उन्हें भेंट की गई। उन्होंने पटल की आगंतुक पंजिका में लिखा– आज साईं सृजन पटल आने का अवसर मिला। यहां आकर लगा कि मैं किसी पूजा स्थल में बैठा हूं। आदरणीय तलवाड़ जी का साहित्य के प्रति लगाव उनके स्वभाव को दर्शाता है। इसमें उत्तराखंड की संस्कृति की सार्थक झलक मिल रही है। आपको इस पुण्य कार्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। 'साईं सृजन पटल' यूं ही आगे बढ़ता रहे।

प्रस्तुतिः
श्रीमती नीलम तलवाड़

बहुउद्देशीय शिविर

स्वस्थ नारी - सशक्त परिवार

राजधानी देहरादून में 17 सितंबर को 'स्वस्थ नारी – सशक्त परिवार' अभियान के अंतर्गत राज्य स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ राजकीय दून मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में किया गया। इस निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं बहुउद्देशीय शिविर का शुभारंभ राज्यपाल ले.ज.(से.नि.) गुरमीत सिंह तथा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मध्य प्रदेश के धार से वर्चुअल माध्यम से शिविर में उपस्थित लाभार्थियों को संबोधित किया गया। राजकीय दून मेडिकल कॉलेज में आयोजित इस शिविर में 563 लाभार्थियों का पंजीकरण करते हुए विभिन्न सेवाएं प्रदान की गई। जनपद देहरादून के कुल 6 स्वास्थ्य शिविरों में कुल 1600 लाभार्थियों द्वारा स्वास्थ्य जांच सेवाओं का लाभ लिया गया।

जनपद देहरादून में 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सामुदायिक एवं ग्राम/वार्ड स्तर पर 425 बहुउद्देशीय निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जायेगा,जिसमें 12 वृहद शिविर उप जिला चिकित्सालय एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर आयोजित किये जायेंगे।

जनजागरण

दून विश्वविद्यालय

'नशा मुक्त भारत' अभियान के अंतर्गत नुक्कड़ नाटक

दून विश्वविद्यालय नशा मुक्ति प्रकोष्ठ एवं सांस्कृतिक परिषद तथा थिएटर विभाग के संयुक्त प्रयास से विश्वविद्यालय परिसर में 'नशा मुक्त भारत' अभियान के अंतर्गत नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से नशे के दुष्प्रभाव, रोकथाम व पुनर्वास के विकल्पों पर गहन रूप से प्रकाश डाला गया और दर्शक–भागीदारी आधारित संवाद भी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य युवा पीढ़ी और उनके अभिभावकों में नशे के प्रति सचेतना पैदा करना, पुनर्वास तथा सहायक सेवाओं की जानकारी देना और सामुदायिक जिम्मेदारी को मजबूती देना था। थिएटर विभाग के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नाटकीय मंचन में स्थानीय भाषा व लोकशैली के माध्यम से वास्तविक जीवन के प्रसंग दिखाए गए, जिनसे उपस्थित लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा। मंच संचालन गजेंद्र सिंह रावत ने किया स इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर सुरेखा डंगवाल ने कहा कि हम विश्वविद्यालय में एक सुरक्षित और सकारात्मक शैक्षिक माहौल सुनिश्चित करने की दिशा में प्रयत्नशील है। इसके लिए लगातार कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं क्योंकि नशा केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि पारिवारिक और सामाजिक चुनौती है। इसलिए हमें कार्यशाला, नुक्कड़ नाटक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से बचाव और पुनर्वास दोनों दिशाओं में समन्वित प्रयास करना होगा। परिसर को नशा मुक्त रखने हेतु गठित नशा मुक्त प्रकोष्ठ की समन्वयक प्रो. रीना सिंह ने कहा कि नशा मुक्त अभियान का मूल उद्देश्य जानकारी देना और समुदाय में विश्वास बनाना है डराना नहीं। नुक्कड़ नाटक ऐसे भावनात्मक और दृश्य तरीके हैं जो संदेश को सीधे ह्रदय तक पहुँचाते हैं और नशे से दूर रखते हैं । डी.एस.डब्ल्यू प्रो. एच. सी. पुरोहित ने कहा कि आज के नुक्कड़ नाटकों ने यह दिखाया कि नशे के रोकथाम में कैंपस–स्तर पर जागरूकता, परामर्श और सक्रिय समयबद्ध हस्तक्षेप काफी प्रभावी हो सकता है ऐसे कार्यक्रमों को बढ़ाने की जरूरत है।

विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स चेयरमैन डॉ. सुनीत नैथानी ने कहा कि हम खेल कार्यक्रमों, क्लबों और नियमित व्यायाम के माध्यम से विद्यार्थियों को नशे से दूर रखने की दिशा में और अधिक योजनाएँ लागू कर रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. चेतना पोखरियाल, डॉ. अजीत पंवार सहित संकाय सदस्य उपस्थित रहे।नुक्कड़ नाटक प्रस्तुतियों में छात्रों ने नशा मुक्ति के संदेश को प्रभावशाली ढंग से मंचित किया। प्रस्तुत कलाकारों में अंजेश कुमार, राजेश भारद्वाज, ज्योत्सना इस्टवाल, सरिता भट्ट, विनीत पवार, सरिता बहुगुणा, सुनील, सहित अनेक छात्र–छात्राओं ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई और दूरसंचार विभाग का भी महत्वपूर्ण सहयोग है ।

प्रस्तुति: अंकित तिवारी, उपसंपादक

सम्मान

आरुषि निशंक को दुबई में मिला 'उद्यमिता उत्कृष्टता पुरस्कार'

पूर्व मुख्यमंत्री डॉ.रमेश पोखरियाल निशंक की पुत्री आरुषि निशंक को निर्माता व पर्यावरणविद के रूप में उनके कार्य के लिए 'उद्यमिता उत्कृष्टता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार विमेनप्रेन्योर एक्स अमीराती समिट 2025 में शेखा जवाहर बिंत खलीफा अल खलीफा द्वारा दुबई हिल्टन में प्रदान किया गया।यह पुरस्कार, जो इस सम्मेलन का सर्वोच्च सम्मान है, उन दूरदर्शी महिलाओं को दिया जाता है जो नवाचार, उद्यम और सामाजिक परिवर्तन के माध्यम से नेतृत्व की परिभाषा को नया आयाम दे रही हैं। आरुषि को विशेष रूप से उद्यमिता को पर्यावरणीय वकालत और उद्देश्य-प्रधान मीडिया के साथ जोड़ने के उनके क्रांतिकारी कार्य के लिए सराहा गया। दुबई, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और नवाचार का केंद्र है,में यह वैश्विक सम्मान प्राप्त करना, आरुषि के प्रभाव को सीमाओं से परे और बढ़ाता है। अपनी प्रोडक्शन वेंचर्स के माध्यम से वह लगातार ऐसे प्रभावशाली कंटेंट तैयार कर रही हैं जो जलवायु परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण और सांस्कृतिक धरोहर जैसे अहम मुद्दों पर केंद्रित है।

एक गतिशील उद्यमी के रूप में, आरुषि ने खुद को एक प्रमुख आवाज के रूप में स्थापित किया है, जो कहानी कहने को बदलाव का साधन मानती हैं और वैश्विक दर्शकों तक सार्थक संदेश पहुंचा रही हैं।विमेनप्रेन्योर एक्स अमीराती समिट एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मंच है जो दुनिया की सबसे प्रेरणादायक महिला नेताओं, उद्यमियों और परिवर्तनकारी व्यक्तित्वों को जोड़ता है, जो एक अधिक समावेशी, टिकाऊ और समान भविष्य का निर्माण कर रही हैं।

उपलब्धि

पीएनजी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर

एनसीसी यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम में कजाकिस्तान में अंजलि गोस्वामी ने किया भारत का प्रतिनिधित्व

पीएनजी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामनगर नैनीताल की 24 यूके गर्ल्स बटालियन की एनसीसी कैडेट अंजलि गोस्वामी को यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के अंतर्गत कजाकिस्तान में भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला।इस कार्यक्रम में कैडेट को वैश्विक संस्कृति आदान-प्रदान में सम्मिलित होने,अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समझ को बढ़ावा देने का अनूठा अवसर मिलता है।

यह आदान-प्रदान कार्यक्रम एनसीसी द्वारा आयोजित एक नियमित पहल है,जो कैडेटों को अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाने और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की सांस्कृतिक विविधता की समृद्धि को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। एएनओ लेफ्टिनेंट कृष्णा भारती ने बताया कि सीनियर अंडर ऑफिसर अंजलि गोस्वामी का चयन विभिन्न मानकों एवं प्रतियोगिताओं को उत्तीर्ण करने के उपरांत हुआ था। अंजलि की इस अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.एम.सी.पाण्डे,चीफ प्रॉक्टर प्रो.एस.एस.मौर्या व 24 यूके गर्ल्स बटालियन एनसीसी अल्मोड़ा के प्रभारी कमांडिंग ऑफिसर कर्नल जितेंद्र शर्मा सहित महाविद्यालय परिवार ने शुभकामनाएं दी। कजाकिस्तान से रामनगर लौटने पर अंजलि का महाविद्यालय में भव्य स्वागत किया गया।

प्रस्तुति:
अमन तलवाड़
सह सम्पादक

24 सितंबर-एनएसएस डे

डोईवाला कॉलेज के दो सर्वश्रेष्ठ एनएसएस स्वयंसेवियों को 'साईं सृजन सम्मान'

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला–देहरादून के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के दो सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवियों – सत्यम कुमार और आरती को वर्ष 2025 के 'साईं सृजन सम्मान' से नवाजा गया। साईं सृजन पटल के संयोजक प्रो.के.एल तलवाड़ के अनुसार यह मंच जहां एक ओर लेखन और सृजन को प्रोत्साहित करता है,वहीं दूसरी ओर प्रतिभाओं को सम्मानित कर समाज में एक सकारात्मक संदेश देने का प्रयास भी किया जा रहा है। डोईवाला महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.डी.पी.भट्ट ने बताया कि साईं सृजन पटल के कार्यालय से इस संदर्भ में पत्र प्राप्ति के बाद महाविद्यालय के एनएसएस कार्यक्रम अधिकारियों की अनुशंसा के उपरांत उक्त दो स्वयंसेवियों का चयन इस सम्मान के लिए किया गया था।

सत्यम ने एनएसएस के शिविरों में प्रतिभाग करके स्वैच्छिक रक्तदान को प्रोत्साहित किया है। वर्ष 2024 में हिमाचल प्रदेश में रीजनल माउंटेनियरिंग सेंटर में एवं उत्तराखंड के शिवपुरी में रिवर राफ्टिंग में सक्रिय प्रतिभाग किया है। आरती ने विभिन्न शिविरों में प्रतिभाग कर आमजनमानस को जनजागरुकता अभियानों में जोड़ने का सराहनीय कार्य किया है। साथ ही शिवपुरी में राज्य स्तरीय साहसिक प्रशिक्षण में भी भाग लिया। इन दोनों ने पूर्ण मनोयोग से एनएसएस की भावना को अंगीकार किया है। साईं सृजन पटल की ओर से इन्हें 'सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी सम्मान' का मोमेन्टो, सम्मान पत्र एवं रू० 501– नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

राज्य एनएसएस अधिकारी डा.सुनैना रावत व कार्यक्रम अधिकारी डॉ० किरन जोशी ने साईं सृजन पटल की इस पहल की सराहना करते हुए इन दोनों स्वयंसेवियों को शुभकामनाएं प्रेषित की। सम्मान समारोह में उप संपादक अंकित तिवारी व नीलम तलवाड़ आदि मौजूद रहे। प्रो.तलवाड़ के अनुसार यह सम्मान प्रतिवर्ष विभिन्न महाविद्यालय के दो चयनित सर्वश्रेष्ठ एनएसएस स्वयंसेवियों को दिया जायेगा।

उत्सव

दयारा बुग्याल में सादगी से मनाया – बटर फेस्टिवल

उत्तरकाशी जनपद के भटवाड़ी विकास खंड स्थित दयारा बुग्याल में 6 सितंबर को पारंपरिक अंढूड़ी उत्सव (बटर फेस्टिवल) धराली आपदा के कारण सादगी से मनाया गया। उत्तरकाशी नगर से 42 किमी दूरी और भटवाड़ी विकास खंड के रैथल गांव से छह किमी की पैदल दूरी नर 28 वर्ग किमी क्षेत्र में फैले दयारा बुग्याल में पीढ़ियों से अंढूड़ी उत्सव मनाने की परंपरा है। बताया जाता है कि पहले यहां गाय के गोबर से होली खेली जाती थी। उत्सव को पर्यटन से जोड़ने को मक्खन और मट्ठे का इस्तेमाल किया जाने लगा। प्रत्येक वर्ष भाद्रपद संक्रान्ति (15–16 अगस्त) को मनाया जाने वाले इस पारंपरिक अंढूड़ी उत्सव को इस साल आपदा के कारण लगभग बीस दिन बाद सादगी से मनाया गया। इस मौके पर ग्रामीणों ने अपने भगवान सोमेश्वर देवता की डोली की पूजा–अर्चना कर प्रकृति और पशुधन की समृद्धि की कामना की। ग्रामीणों और पर्यटकों ने एक–दूसरे पर दूध, मट्ठा और मक्खन लगाकर उत्सव मनाया। यह उत्सव दुनिया में अपनी तरह का अनूठा पर्व है,जहां दूध,मक्खन और मट्ठा की होली खेली जाती है। अपने अनोखेपन के कारण यह उत्सव न सिर्फ स्थानीय संस्कृति का प्रतीक बन गया है,बल्कि हर साल हजारों देश–विदेशी पर्यटक इसे देखने के लिए दयारा बुग्याल पहुंचते हैं।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

देवभूमि

भगवान रुद्रनाथ : आस्था, तप और प्राकृतिक सौंदर्य की अद्वितीय त्रिवेणी

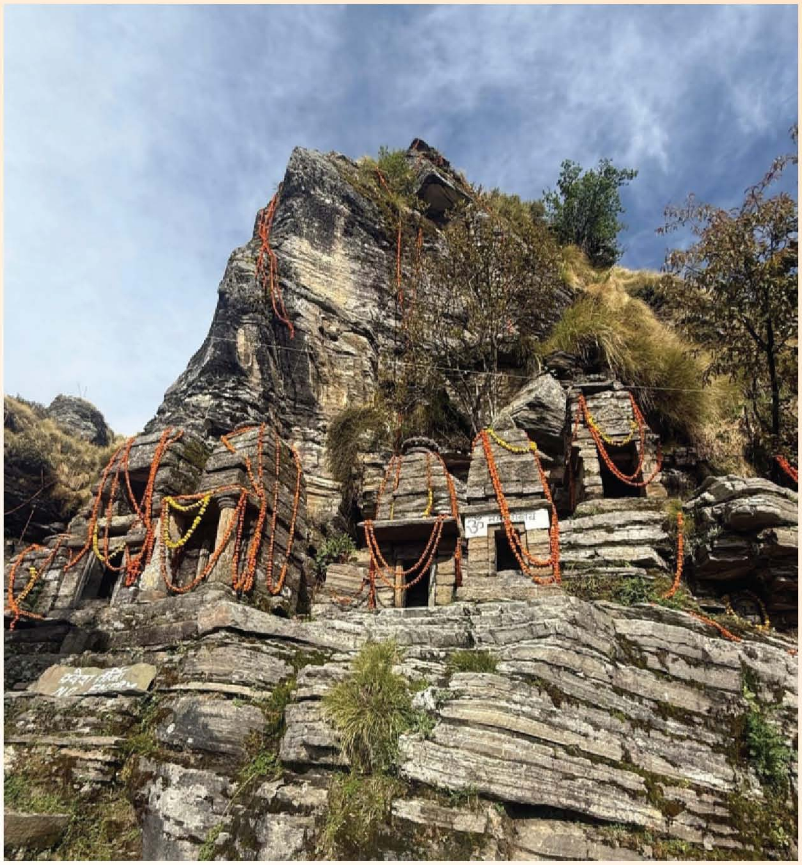

उत्तराखंड की देवभूमि हिमालयी चोटियों, बुग्यालों और निर्मल धाराओं से सुसज्जित है। यही भूमि भारतीय संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म का वास्तविक केंद्र मानी जाती है। देवभूमि के पंचकेदार विशेष रूप से शिवभक्तों के लिए तीर्थ और तप का पावन स्थल हैं। इन्हीं पंचकेदारों में एक हैं भगवान रुद्रनाथ, जहाँ भगवान शिव के रुद्र मुख की पूजा होती है। रुद्रनाथ केवल एक मंदिर या तीर्थ नहीं, बल्कि वह तपस्थली है जो आस्था, साहस, त्याग और आत्मसाक्षात्कार का अद्भुत संगम है।उत्तराखंड की भूमि में स्थित पंचकेदार, भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा हैं। इन पंचकेदारों में भगवान रुद्रनाथ का विशेष स्थान है, जो शिव के रुद्र रूप को समर्पित एक अत्यधिक पवित्र स्थल है। यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यहां की यात्रा, जो कठिनाईयों से भरी होती है, श्रद्धा, तप और साहस का एक अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत करती है। रुद्रनाथ की यात्रा न केवल भक्ति की यात्रा है, बल्कि यह एक आत्मिक और मानसिक सशक्तिकरण का मार्ग भी है। रुद्रनाथ केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि हिमालयी प्राकृतिक सौंदर्य का जीवंत प्रतीक है। चारों ओर फैले बुग्याल, झरनों की मधुर ध्वनि, बर्फीली हवाओं का स्पर्श और हिमालय का आभामंडल भक्त के भीतर एक अलौकिक शांति का संचार करता है। कई श्रद्धालु बताते हैं कि मंदिर परिसर में स्थिर होकर जब कोई ध्यान करता है तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे स्वयं प्रकृति मंत्रोच्चार कर रही हो।

रुद्रनाथ परिसर में वन देवता का मंदिर और पांडवों व द्रौपदी को समर्पित छह छोटे मंदिर भी हैं, जिनमें शिवलिंग प्रतिष्ठित हैं। यह संपूर्ण क्षेत्र श्रद्धालुओं को धार्मिक, पौराणिक और सांस्कृतिक चेतना का अनूठा अनुभव कराता है।

रुद्रनाथ की विशेषताएँ और धार्मिक महत्व

रुद्रनाथ मंदिर का धार्मिक महत्व इस तथ्य से भी बढ़ जाता है कि यह भगवान शिव के मुख का प्रतीक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, रुद्रनाथ के चारों ओर स्थित अन्य केदारों के साथ यह शिव के विभिन्न रूपों को दर्शाता है। केदारनाथ मंदिर शिव के कूबड़ का प्रतीक है, मद्महेश्वर नाभि का, तुंगनाथ भुजाओं का और कल्पेश्वर जटाओं का प्रतीक है। इस प्रकार रुद्रनाथ भगवान शिव के मुख के रूप में प्रतिष्ठित है और यहाँ शिव के दर्शन के साथ–साथ उनके दिव्य रूप की पूजा की जाती है।

भगवान रुद्रनाथ : शिव के मुख रूप की पूजा

महाभारत में पांडवों द्वारा भगवान शिव से क्षमा प्राप्ति के लिए रुद्रनाथ की खोज का उल्लेख मिलता है। मान्यता है कि भगवान शिव ने रुद्र रूप में पांडवों को दर्शन दिए और उनके पापों का प्रायश्चित किया। रुद्रनाथ जी का मंदिर भगवान शिव का स्थान है, जो पंचकेदारों में से एक महत्वपूर्ण स्थान रखता

है। यह मंदिर शिव के रुद्र रूप की उपासना का अद्वितीय केंद्र बन चुका है।

महाभारत के समय, जब पांडवों को गोत्र हत्या के पाप से मुक्ति की आवश्यकता थी, भगवान श्री कृष्ण ने पांडवों को बताया कि केवल भगवान शिव ही उन्हें इस पाप से मुक्ति दे सकते हैं। इसके बाद पांडवों ने केदारनाथ में भगवान शिव के कूबड़ के दर्शन किए। पंचकेदारों में रुद्रनाथ भगवान शिव के मुख का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि अन्य केदार भगवान शिव के शरीर के विभिन्न अंगों को दर्शाते हैं। रुद्रनाथ में भगवान शिव का स्वरूप इतना सुंदर और आकर्षक है कि यह किसी मूर्ति से भी अधिक जीवंत प्रतीत होता है। यहाँ का वातावरण और ऊर्जा श्रद्धालु को आत्मिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति का अहसास कराता है।

रुद्रनाथ की यात्रा : तप, साहस और श्रद्धा का मार्ग

रुद्रनाथ तक की यात्रा एक शारीरिक तपस्या और मानसिक धैर्य की परीक्षा है। यह यात्रा श्रद्धालुओं को कठिन पहाड़ी रास्तों और भयंकर मौसम के बावजूद भगवान शिव के दर्शन की अद्वितीय अनुभूति कराती है। यात्रा के दौरान श्रद्धालु न केवल शारीरिक रूप से संघर्ष करते हैं, बल्कि उनका आस्थात्मक समर्पण भी इस यात्रा को एक आध्यात्मिक यात्रा में बदल देता है। हिमालय की गोद में स्थित यह मंदिर एक ऐसी जगह है, जहाँ प्रकृति और आस्था का अद्वितीय संगम होता है। घने जंगल, बर्फ से ढकी चोटियाँ, निर्मल जलधाराएं और हरे-भरे बुग्यालों की सुंदरता इस यात्रा को और भी आध्यात्मिक बनाती है।

रुद्रनाथ की यात्रा में श्रद्धालु कठिन परिस्थितियों के बावजूद न केवल भौतिक रूप से कठिन मार्ग पार करते हैं, बल्कि वे आत्मिक शांति और भगवान शिव की भक्ति में आत्मनिर्भर होते हैं। यह यात्रा वास्तव में आत्मसाक्षात्कार की यात्रा बन जाती है, जहाँ साधक को अपने भीतर की आस्था और धैर्य का अहसास होता है।

प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक अनुभव

रुद्रनाथ का वातावरण धार्मिक और प्राकृतिक दोनों दृष्टियों से अतुलनीय है। यहां का नयनाभिराम दृश्य, शांत वातावरण भक्तों को भगवान शिव की उपस्थिति का साक्षात्कार कराता है। यह स्थल केवल धार्मिक भावना का केंद्र नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ गहरे तादात्म्य का अनुभव भी प्रदान करता है। यहां की यात्रा न केवल बाहरी संघर्षों से जुड़ी होती है, बल्कि यह अंदरूनी संघर्षों को भी जोड़ने का एक अवसर है, जो व्यक्ति को आत्मिक रूप से सशक्त बनाती है। रुद्रनाथ तक की यात्रा अत्यधिक कठिन है, और यह न केवल शारीरिक तपस्या, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक धैर्य की भी परीक्षा है। यह यात्रा श्रद्धालुओं को प्रकृति के साथ आस्था और साधना का अद्वितीय संगम प्रदान करती है। हिमालय की गोद में स्थित यह मंदिर श्रद्धालुओं को कठिन पहाड़ी रास्तों से गुजरने का अवसर देता है, जो अंततः उन्हें भगवान शिव की उपासना की ओर प्रेरित करता है।

यात्रा का प्रत्येक क्षण एक साधक को आत्मसाक्षात्कार की ओर ले जाता है, और यहाँ के दृश्य एक भक्त को भगवान शिव की उपस्थिति का साक्षात्कार कराते हैं। रुद्रनाथ का वातावरण न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से भी अत्यधिक प्रभावशाली है। यहाँ के हरे-भरे बुग्याल, बर्फीली हवाएं और शांति से लहराते जलधारे एक भक्त को भगवान शिव के साथ एक गहरे संबंध का अहसास कराते हैं। यह स्थल न केवल भक्तों को आस्था का अनुभव कराता है, बल्कि प्रकृति के साथ गहरे तादात्म्य का अनुभव भी प्रदान करता है। यहाँ की यात्रा बाहरी संघर्षों के साथ-साथ आत्मिक संघर्षों का भी सामना कराती है, जो अंततः एक व्यक्ति को एक नए दृष्टिकोण और अर्थ के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

भगवान रुद्रनाथ के दर्शन और संरक्षण का महत्व

रुद्रनाथ जैसे धार्मिक स्थल न केवल श्रद्धा और भक्ति का केंद्र होते हैं, बल्कि इनके संरक्षण की जिम्मेदारी भी हमारी है। तीर्थ स्थलों का व्यवसायीकरण और पर्यावरणीय संतुलन की अनदेखी से धार्मिक और प्राकृतिक गरिमा पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि रुद्रनाथ के पवित्र धाम की दिव्यता और स्वच्छता बनी रहे, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस स्थल का अनुभव कर सकें।

भगवान रुद्रनाथ : आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा

भगवान रुद्रनाथ के दर्शन और यहाँ की कठिन यात्रा हमें यह सिखाती है कि जीवन के कठिन मार्ग को श्रद्धा, तप और संकल्प से पार किया जा सकता है। रुद्रनाथ न केवल एक तीर्थ स्थल है, बल्कि यह हमें आस्थावान जीवन जीने की प्रेरणा भी देता है। यहाँ की यात्रा हमें भक्ति, तप और समर्पण का सही अर्थ समझाती है। भगवान रुद्रनाथ की यात्रा वास्तव में हर श्रद्धालु को आत्मिक शांति और शक्ति प्रदान करती है।

रुद्रनाथ के मुख्य पुजारी हरीश भट्ट जी के अनुसार, ष्मूर्ति में एक आकर्षण होता है, जो हमें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। अगर हम मंदिर में एक विशेष भाव और स्वभाव लेकर जाएं, तो उसका प्रभाव हमें अवश्य महसूस होगा। मंदिर कोई पर्यटन स्थल नहीं है, यह दर्शन और भक्ति का स्थान है, जहाँ हमें आत्मिक शांति और ऊर्जा प्राप्त होती है। मंदिर के आसपास का आभामंडल हमें शांति और ऊर्जा से भर देता है। हमारे मंदिर ऊर्जा के वे स्रोत हैं, जिन्हें हमारे ऋषि–मुनियों ने साधना से अर्जित कर इस भूमि को दिया है। इन्हें केवल पर्यटन स्थल समझना उनकी गरिमा को कम करना है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि भगवान रुद्रनाथ के पवित्र धाम की दिव्यता और स्वच्छता बनी रहे, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इसका अनुभव कर सकें। महाभारत के अनुसार, पांडवों को गोत्र हत्या से मुक्ति का मार्ग भगवान शिव ने ही दिखाया। रुद्रनाथ को भगवान शिव के मुख रूप का प्रतीक माना जाता है, जो पंचकेदारों में एक अद्वितीय स्थान रखता है। यह यात्रा एक अवसर है, जहां हर श्रद्धालु अपने भीतर के रुद्र रूप से साक्षात्कार कर आत्मिक शांति और शक्ति प्राप्त करता है। हमें इस पवित्र स्थल की महिमा को जानना चाहिए और इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना चाहिए। रुद्रनाथ न केवल एक तीर्थ स्थल है, बल्कि यह एक जीवन जीने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। यहाँ की यात्रा हमें भगवान शिव के रुद्र रूप से साक्षात्कार कराती है और हमारे जीवन में शांति, शक्ति और आस्था का संचार करती है। यह स्थान हम सभी को भक्ति, तपस्या और समर्पण के असली अर्थ को समझने का अवसर देता है, और हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने जीवन को एक आस्थावान और सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाएं।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उपसंपादक

सम्मान

उत्तराखंड की डॉ.मंजू बाला 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' से सम्मानित

नई दिल्ली में विज्ञान भवन में शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित **'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार– 2025 समारोह'** में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू की गरिमामयी उपस्थिति में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने देशभर के 45 उत्कृष्ट शिक्षकों को सम्मानित किया। इस अवसर पर उत्तराखंड के चंपावत जनपद के प्राथमिक विद्यालय च्यूरानी की प्रधानाध्यापिका डॉ.मंजू बाला को भी यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रदान किया गया। डॉ.मंजू बाला इस वर्ष पुरस्कार पाने वाली उत्तराखंड की एकमात्र शिक्षिका हैं। उल्लेखनीय है कि वे राज्य की पहली महिला प्रधानाध्यापिका बनी हैं, जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ है। वर्ष 2005 से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत डॉ. मंजू बाला विद्यार्थियों को नियमित पढ़ाई के साथ–साथ हाईस्कूल और इंटरमीडिएट स्तर पर अंग्रेजी की निःशुल्क कोचिंग भी देती हैं। उन्हें यह पुरस्कार शिक्षण में अपनाई गई उनकी 'त्रिभाषा तकनीक' के लिए दिया गया है। इस तकनीक के तहत वे विद्यार्थियों को हिन्दी,अंग्रेजी और स्थानीय मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाती हैं। उनकी उपलब्धि पर प्रदेश के शिक्षा मंत्री डॉ.धन सिंह रावत ने उन्हें शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनका यह सम्मान उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि के साथ ही संपूर्ण उत्तराखंड के शिक्षा जगत की उपलब्धि है।

प्रस्तुति–
प्रो. जानकी पंवार, सेवानिवृत्त प्राचार्य, सदस्य सलाहकार मंडल साईं सृजन पटल

उत्तराखंड के 11 लोगों को मुख्यमंत्री ने 'शिल्प रत्न पुरस्कार' से किया सम्मानित

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 17 सितंबर को मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन में उत्तराखंड हाथकरघा एवं हस्तशिल्प विकास परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के 11 लोगों को ''उत्तराखंड शिल्प रत्न पुरस्कार'' से सम्मानित किया। इनमें उत्तरकाशी से जानकी देवी,भागीरथी देवी,बागेश्वर से इन्द्र सिंह, अल्मोड़ा से लक्ष्मण सिंह, भूपेंद्र सिंह बिष्ट, हल्द्वानी (नैनीताल) से जीवन चन्द्र जोशी,मोहन चन्द्र जोशी,नारायण नगर मल्लीताल नैनीताल से जानकी

बिष्ट, क्वालिटी कॉलोनी हल्दूचौड़ हल्द्वानी से जगदीश पाण्डेय, चमोली से प्रदीप कुमार, गुड्डी देवी,उत्तरकाशी बड़कोट से महिमानंद तिवारी सम्मिलित थे। मुख्यमंत्री ने इन्हें पुरस्कार धनराशि के चेक व प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित करते हुए कहा कि उत्तराखंड की बुनाई और हस्तशिल्प कला अपनी विविधता,परंपरागत डिजाइन और गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने प्रदेश के शाल्पियों एवं बुनकरों को राज्य की सांस्कृतिक धरोहर के संवाहक बताया। हर्षिल की ऊनी शॉल,मुनस्यारी–धारचूला की थुलमा, अल्मोड़ा की ट्वीड, छिनका की पंखी और पिछौड़े के डिजाइन ने उत्तराखंड को न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि वैश्विक बाजार में भी विशेष पहचान दिलाई है। आज भांग एवं बांस के रेशों से बने वस्त्रों की देशभर में विशेष मांग देखी जा रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'वोकल फॉर लोकल', 'लोकल टू ग्लोबल' और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलें शिल्पियों और बुनकरों के सामाजिक – आर्थिक विकास में मील का पत्थर साबित हो रही हैं। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना,राष्ट्रीय हाथकरघा विकास कार्यक्रम तथा प्रधानमंत्री विश्वकर्मा कौशल सम्मान जैसी योजनाओं के माध्यम से शिल्पियों और बुनकरों के समग्र विकास विकास को सुनिश्चित किया जा रहा है।

राज्य सरकार भी शिल्पी पेंशन योजना,शिल्प रत्न पुरस्कार, बुनकर क्लस्टर सशक्तिकरण, कौशल विकास प्रशिक्षण, मेलों–प्रदर्शनियों एवं ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से स्थानीय उत्पादों के प्रचार–प्रसार और विपणन को प्रोत्साहित कर रही है।

प्रस्तुति :
प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़

संवदेनशील पहाड़ी क्षेत्रों में अनियोजित विकास व जलवायु परिवर्तन से बढ़ रही - प्राकृतिक आपदाएं

उत्तराखंड हिमालय क्षेत्र में बादल फटने एवं भूस्खलन की घटनाओं के इतिहास पर यदि नजर दौड़ायें तो इसका एक लंबा इतिहास रहा है,जब अंतिम हिमयुग से ही भूस्खलन की घटनायें घटित हुई हैं।

भूस्खलन से जुड़े इतिहास में 1970 की गोहना झील,1880 की नैनीताल आपदा , 1998 का मालपा भूस्खलन, 2013 की केदारनाथ आपदा, 2021 रैणी आपदा, 2025 में धराली (उत्तरकाशी), थलीसैण (पौड़ी गढवाल), थराली (चमोली) छेनागाड़ (रुद्रप्रयाग) आपदाएं शामिल हैं। ये घटनाएं मुख्य रूप से भूकंप,बादल फटने, भूस्खलन और भारी बारिश के कारण उत्पन्न हुई हैं ,जो क्षेत्र की भूगर्भीय संवेदनशीलता, जलवायु परिवर्तन और मानवीय हस्तक्षेप के कारण बढ़ रही हैं। उत्तराखंड में हाल में हुई तबाही इसका उदाहरण है। अनियोजित विकास के कार्यक्रम,अवैध निर्माण,अनियमित बारिश और ग्लेशियरों के पिघलने से खतरा बढ़ रहा है। केदारनाथ आपदा के बाद इस संवेदनशील क्षेत्र में जरूरी कदम नहीं उठाए जाने के कारण भविष्य में ऐसी आपदाएं इस हिमालयी क्षेत्र में और बढ़ सकती हैं।हिमालयी क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष भूस्खलन,बादल फटने की घटना भूकंप, बाढ़ आने जैसी घटनाएं सिर्फ पारंपरिक संवेदनशील क्षेत्रों तक सीमित नही रह गयी हैं। बदलते मौसम और जलवायु ने उत्तराखंड हिमालय क्षेत्र में नए खतरे वाले इलाके बना दिए हैं। इस विनाश के पीछे मानवीय हस्तक्षेप के साथ–साथ पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक बनावट भी बड़ी वजह हो सकती हैं। वर्ष 2025 के जुलाई – अगस्त के महिनों में उत्तराखंड के उत्तरकाशी, पौड़ी, चमोली, रुद्रप्रयाग में आई आपदा केवल प्राकृतिक आपदा नहीं थी, बल्कि विज्ञान, पर्यावरण, और मनुष्य की लापरवाही का मिला – जुला प्रभाव था। धराली,थराली, थलीसैण, छेनागाड़ में बादल फटने से हुई तबाही एवं जानमाल के नुकसान से लोग दहशत में आ गए।

उत्तराखंड में हो रही यह घटनाएं केवल प्राकृतिक त्रासदी नहीं है बल्कि इंसानों की गलतियों और जलवायु परिवर्तन के खतरनाक संकेत भी हैं। हिमालय जैसे संवेदनशील क्षेत्र में हुए और आर्थिक विकास के कारण उत्पन्न हुई इन घटनाओं ने स्पष्ट कर दिया है कि इस संवेदनशील क्षेत्र में यदि अनियोजित विकास के कार्यक्रम – चारधाम सड़क परियोजना, रेलवे परियोजना के नाम पर हरे पेड़ों – जंगलों का कटान,अवैध खनन जैसी मानवीय गतिविधियां आपदा के मुख्य कारण हैं। आपदा भविष्य के लिए चेतावनी ही नहीं बल्कि वर्तमान का संकट भी है। बादल फटने की घटना प्राकृतिक संकट हैं, किन्तु नदी नालों के मार्ग में मनुष्य द्वारा उत्पन्न अवरोध के कारण ही स्वयं मानव को ही जन–धन की हानि उठानी पड़ रही है। उत्तराखंड हिमालय क्षेत्र में बढते हुए खतरे,मानव द्वारा बार – बार की भूल को सिर्फ प्रकृति को दोष देना गलत है। हिमालय क्षेत्र में इसकी सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठाया जाना जरूरी है। वैज्ञानिक नीतियों और भूगर्भ विशेषज्ञों की चेतावनी को नजर अंदाज किया गया तो आने वाले समय में ऐसी आपदाएं और अधिक मात्रा में आयेंगी, इसलिए समय रहते हमें इस संवेदनशील क्षेत्र में पर्यावरण अनुकूल विकास की योजना को कार्यान्वित करना होगा।

प्रस्तुति:
डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट विभागाध्यक्ष भूगोल,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कर्णप्रयाग

"राष्ट्रीय एकता और हिन्दी"

हिन्दी दिवस पर 'लेखक गांव में संवाद' कार्यक्रम

हिंदी दिवस के अवसर पर भारत के पहले लेखक गांव थानों में आयोजित संवाद कार्यक्रम 'राष्ट्रीय एकता और हिंदी' में विभिन्न साहित्यकारों, कवियों और हिंदी शोधार्थियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ,जिसमें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व शिक्षा मंत्री भारत सरकार एवं पूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखंड डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', कार्यक्रम के मुख्य वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल, पूर्व उच्च शिक्षा निदेशक प्रो. सविता मोहन और स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय की उपाध्यक्ष विदुषी निशंक आदि शामिल रहे।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने अपने उद्‌बोधन में हिंदी को एकता का प्रतीक बताया और कहा, 'हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, बल्कि हमारे सांस्कृतिक और सामाजिक सामंजस्य का प्रतीक है। हमें इसे और सशक्त बनाना होगा ताकि यह हर भारतीय के दिल में घर कर सके और राष्ट्रीय एकता को मजबूती दे सके।' कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल ने हिंदी भाषा की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा, 'हिंदी में न केवल भारतीयता की भावनाएं समाहित हैं, बल्कि यह एकता का संदेश भी देती है। हमें इसे केवल भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के रूप में देखना चाहिए।' कार्यक्रम की अध्यक्ष, पूर्व उच्च शिक्षा निदेशक प्रो.सविता मोहन ने कहा, 'हिंदी का महत्व शिक्षा और साहित्य दोनों में अत्यधिक है। यह हमारे विचारों को व्यक्त करने का सबसे प्रभावी साधन है और इसे सशक्त बनाने की जिम्मेदारी हम सभी की है। 'कार्यक्रम के दौरान काव्य पाठ का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रसिद्ध कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी के प्रति अपने प्रेम और समर्पण को व्यक्त किया।

संवाद कार्यक्रम ने हिंदी भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए, राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रगाढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। साहित्य जगत की प्रमुख हस्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और इसे समृद्ध किया, जिससे हिंदी दिवस के इस आयोजन ने न केवल भाषा, बल्कि भारतीयता और एकता के संदेश को भी और अधिक मजबूत किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रुप से ममता गुप्ता, डॉ. क्षमा कौशिक, मोनिका शर्मा, रचना शर्मा, डॉ. नूतन स्मृति, कविता बिष्ट, मणिक अग्रवाल, मनमोहन सकलानी, तनुजा सिंह, डा. मुकेश नौटियाल, विरेन्द्र डंगवाल, कुसुम रावत, बीना बेंजवाल रहे । कार्यक्रम का संचालन डॉ. भारती मिश्रा ने किया।

प्रस्तुति:
अंकित तिवारी, उपसंपादक

जागरूकता

मिलावट को जानें और पहचानें

मिलावट कोई नई समस्या नहीं है। इतिहास के पन्नों को पलटें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि समाज को लंबे समय से मिलावट का सामना करना पड़ा है। परंतु आधुनिक युग में यह समस्या अभूतपूर्व गंभीरता और व्यापकता के साथ हमारे सामने उपस्थित है। आज यह केवल एक उपभोक्ता धोखाधड़ी का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह हमारे स्वास्थ्य, समाज और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य के लिए गहरी चुनौती बन चुका है।

दैनिक जीवन में मिलावट की भयावह सच्चाई

आज हम जिस युग में जी रहे हैं, उसमें भोजन की थाली से लेकर पूजा की सामग्री तक – लगभग हर चीज मिलावट की शिकार हो चुकी है। दूध में यूरिया, स्टार्च और डिटर्जेंट मिलाकर उसे गाढ़ा और असली जैसा दिखाया जाता है। पनीर में ड्राय मिल्क और कृत्रिम तेल मिलाकर उसे ताजा बताया जाता है। घी को वनस्पति तेल और सुगंधित रसायनों से नकली रूप दिया जाता है। मसालों में हानिकारक रंग–जैसे हल्दी में क्रोमियम येलो, मिर्च में लाल ऑक्साइड–डाले जाते हैं। दालों को पॉलिशिंग एजेंट और रंगों से चमकदार बनाया जाता है।चीनी में चॉक पाउडर, नमक में पत्थर और मिट्टी, आटे में चूना और स्टार्च, तेलों में खनिज पदार्थ, और फलों–सब्जियों में कार्बाइड और वैक्स का प्रयोग–ये सब आज आम हो गए हैं। यहां तक कि मिठाइयों में नकली सिल्वर फॉयल और कृत्रिम शुगर सिरप का प्रयोग किया जाता है।

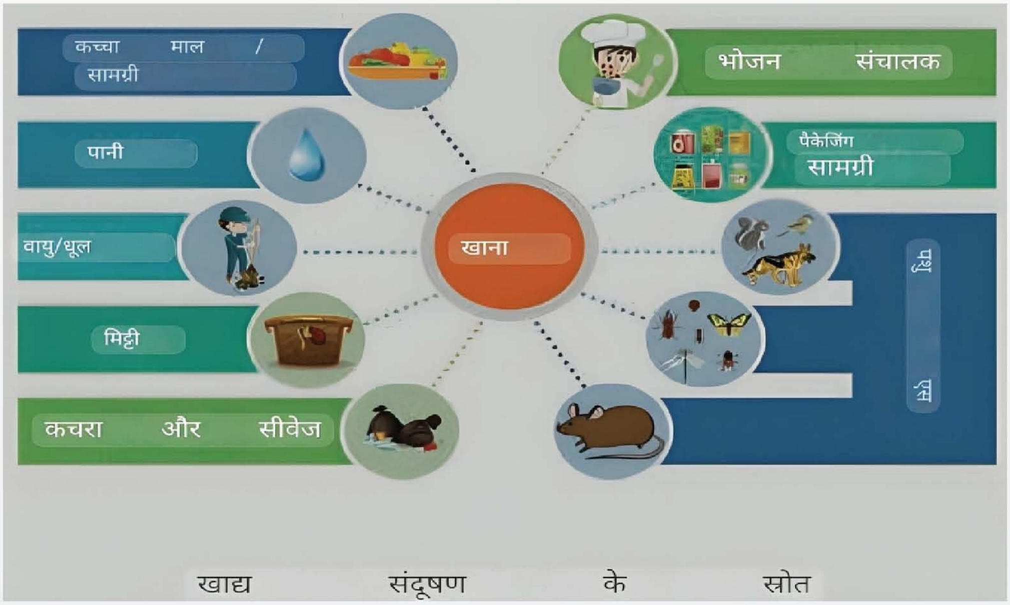

यह केवल धोखाधड़ी नहीं है। यह धीरे–धीरे शरीर को बीमारियों का घर बना देती है। कैंसर, किडनी रोग, हार्मोन असंतुलन, लीवर की खराबी, और बच्चों में मानसिक व शारीरिक विकास की रुकावट–इन सबके पीछे मिलावटी भोजन का बड़ा योगदान है।

घरेलू परीक्षण: जागरूकता की पहली सीढ़ी

मिलावट की पहचान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है। थोड़े से वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आम नागरिक भी घर पर इसकी पहचान कर सकता है।

दूध: एक बूंद टाइल पर डालें–शुद्ध दूध धीरे फैलेगा, मिलावटी दूध पानी की तरह बह जाएगा।

हल्दी: गर्म पानी में डालें–प्राकृतिक हल्दी हल्का रंग छोड़ेगी, मिलावटी गहरा नारंगी रंग।

चीनी: पानी में घोलें–यदि तल में सफेद अवशेष बचे तो चॉक की मिलावट है।

चाय की पत्तियाँ: शुद्ध पत्तियाँ धीरे रंग छोड़ेंगी, मिलावटी तुरंत गहरा रंग देंगी।

आटा: नींबू रस डालने पर झाग बने तो चूना मिला है।

नमक: पानी में घोलने पर यदि तल में पाउडर बैठ जाए तो मिलावट है।

दालें: पानी में भिगोने पर रंग निकलना या परत उतरना पॉलिशिंग की निशानी है।

फल–सब्जियाँ: अगर अस्वाभाविक रूप से चमकदार हों, तो समझिए उन पर रसायन चढ़ा है।

ये सरल प्रयोग उपभोक्ता को सजग बनाते हैं और समाज में विज्ञान– आधारित जागरूकता की नींव रखते हैं।

SPECS और "रसोई कसौटी"

वर्ष 1999 में SPECS संस्था ने मिलावट के विरुद्ध एक जन–अभियान शुरू किया, जो आज भी सक्रिय है। इसके अंतर्गत कार्यशालाएं, परीक्षण शिविर और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

वर्ष 2004 में SPECS ने एक अभिनव किट "रसोई कसौटी" विकसित की, जिससे घर पर ही खाद्य वस्तुओं की शुद्धता जांची जा सकती है। यह किट भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त है और देशभर में इसका व्यापक उपयोग हो चुका है।

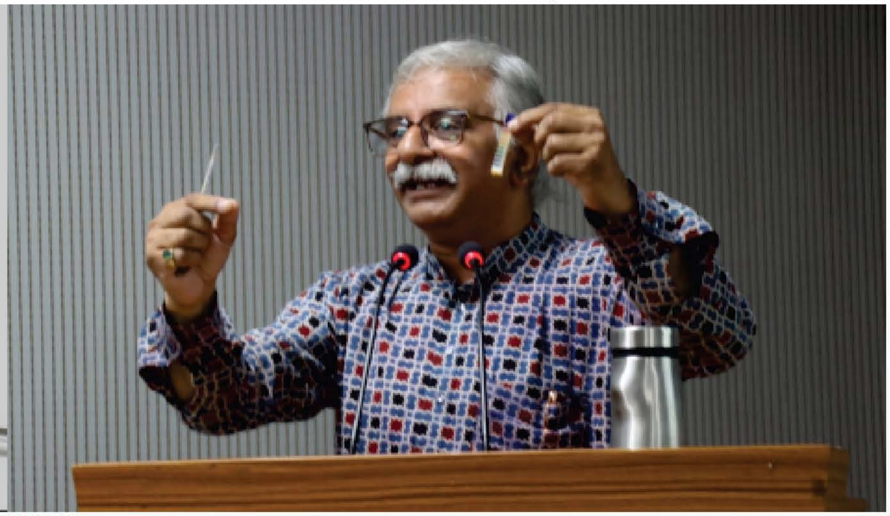

चारधाम यात्रा और "मिलावट से मुक्ति अभियान"

उत्तराखंड की चारधाम यात्रा में SPECS ने विशेष अभियान चलाया, जिसमें यात्रियों, दुकानदारों और आम जनता को मिलावटी खाद्य पदार्थों की पहचान कराई गई। इस अभियान को सरकार और मीडिया दोनों ने सराहा।

समाधान मिलावट की समस्या पर समग्र दृष्टिकोण

मिलावट का समाधान केवल सरकार या उपभोक्ता पर नहीं छोड़ा जा सकता। समाज के हर वर्ग की इसमें भूमिका है।

घर–परिवार स्तर पर

- गुणवत्ता चिन्ह देखकर ही वस्तुएं खरीदें।
- बिल लेना अनिवार्य करें।
- घरेलू परीक्षण सीखें और बच्चों को सिखाएं।
- छत पर सब्जियाँ उगाएं, अचार–मसाले घर में बनाएं।
- बुजुर्गों के अनुभवों का लाभ लें।

विद्यालय स्तर पर

- "मिलावट को जानें और पहचानें" को सिलेबस का हिस्सा बनाया जाए।
- फूड सेफ्टी क्लब बनाए जाएं।
- छात्रों द्वारा कैंटीन और मिड–डे मील की गुणवत्ता जांच हो।
- बुजुर्गों को बुलाकर अनुभव साझा कराएं।

समाज स्तर पर

नुक्कड़ नाटक, रैली, पोस्टर प्रतियोगिता जैसे अभियान चलाए जाएं।

- फूड टेस्टिंग कैंप आयोजित हों।
- शुद्ध व्यापार करने वाले दुकानदारों को सम्मानित किया जाए।

व्यापार स्तर पर

- व्यापारी सेल्फ–सर्टिफिकेशन प्रणाली अपनाएं।
- उत्पादों पर QR कोड से ट्रेसबिलिटी लागू हो।
- सप्लाई चेन और कोल्ड स्टोरेज सुधारे जाएं।

सरकारी स्तर पर

कड़े कानून और फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाए जाएं।

- मोबाइल टेस्टिंग वैन गांवों तक पहुंचें।
- रिसर्च एंड डेवलपमेंट में निवेश बढ़े।
- मिलावट की सूचना देने वालों को पुरस्कार मिले।
- शुद्ध भारत आंदोलन को मीडिया और सोशल मीडिया पर बढ़ावा मिले।

बुजुर्गों की भूमिका

बुजुर्ग पारंपरिक तरीकों से मिलावट की पहचान करने में दक्ष होते हैं। उनके ज्ञान को विद्यालयों और समाज में साझा किया जाना चाहिए और उसे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

प्रिजर्वेटिव्स और सिंथेटिक मिलावटः एक गंभीर खतरा

आज प्रिजर्वेटिव्स और सिंथेटिक रसायनों का बढ़ता उपयोग गंभीर चिंता का विषय है।

- इनके उपयोग पर कड़े मानक और नियम हों।
- हर उत्पाद का लैब टेस्ट अनिवार्य हो।
- हानिकारक रसायनों पर पूर्ण प्रतिबंध लगे।
- उपभोक्ताओं को इनके दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया जाए।

मिलावट के विरुद्ध लड़ाई लंबी और कठिन है, लेकिन असंभव नहीं। एक जागरूक उपभोक्ता ही मिलावटखोरों का सबसे बड़ा शत्रु है। जब विज्ञान, अनुभव और सामूहिक चेतना मिलकर खड़ी होगी, तब समाज को इस अभिशाप से मुक्ति मिल सकेगी।

प्रस्तुति–डॉ० बृजमोहन शर्मा,
अध्यक्ष/वैज्ञानिक
स्पेक्स संस्था

व्यक्तित्व

भाषा आंदोलन के अग्रणी ध्वजवाहकः श्री गणेश खुगशाल 'गणी'

उत्तराखण्ड लोक संस्कृति व साहित्यिक मंच संचालन की जब भी बात आयेगी तो एक नाम हमेशा सर्वोपरि रहेगा– गणेश खुगशाल 'गणी'। 'गणी' जी उत्तराखण्ड के गढ़वाली साहित्य जगत के एक प्रमुख व सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनका जन्म 22 अप्रैल 1968 को पौड़ी जनपद के किनगोडीखाल गाँव में हुआ था। उनका जीवन और साहित्यिक योगदान गढ़वाली भाषा और संस्कृति को समर्पित रहा है। गणी जी की लेखन शैली, लोक और साहित्य के बीच एक पुल का काम करती है, जहाँ भावनाएँ, भाषा और संस्कृति एक साथ चलती व बहती हैं।

एक श्रेष्ठ मंच संचालक, कवि व वरिष्ठ सहित्यकार के रूप में उनकी अनवरत भाषा–यात्रा अभी भी जारी है। उन्हें भाषा आंदोलन का ध्वजवाहक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इन्होंने 'गणी' उपनाम से साहित्य कर्म किया और मुख्य रूप से गढ़वाली भाषा–साहित्य की सेवा में सक्रिय हैं। अपनी मातृभाषा के लिए उनका समर्पण और त्याग आज नई पीढ़ी के रचनाकारों और पाठकों को प्रेरित कर रहा है। विभिन्न गोष्ठियों में उनकी ऊर्जावान उपस्थिति गढ़वाली साहित्य को एक अलग ऊंचाई पर ले जा रही है। आपका शुरूआती कार्यक्षेत्र एक पत्रकार के रूप में रहा जिसकी झलक आपकी समालोचना व आलोचना लेखन में देखी जा सकती है। आपने कई संस्थाओं से जुड़कर अपनी भाषा के उत्थान के लिए कई कदम उठाये। आपका पहाड़–प्रेम व हिमालय–प्रेम इस बात का प्रमाण है कि आपने कई न्यूज हाउस का ऑफर ठुकराकर अपनी ही नगरी 'पौड़ी' में रहने व कार्य करने का निर्णय लिया। आपके अनुसार–'शहरों में घर की खिड़की खोलकर केवल दीवारे, इमारतें नजर आती हैं, लेकिन मेरे घर की खिड़की से हिमालय व खुला संसार नज़र आता है।' अतएव, आपने अपनी जन्मभूमि को ही कर्मभूमि बनाकर साहित्य एवं संस्कृति की सेवा करने का निर्णय लिया।

आप सुप्रसिद्ध **'धाद'** नामक गढ़वाली मासिक पत्रिका के संपादक हैं, जोकि लोकसंस्कृति और साहित्य के प्रचार–प्रसार में अग्रणी मानी जाती है व साथ ही उच्च गुणवत्ता का एक मानक भी प्रस्तुत करती है। इस पत्रिका को एक प्रभावी सांस्कृतिक मंच बनाकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया। इस पत्रिका के माध्यम से गढ़वाली भाषा के संरक्षण व संवर्द्धन के लिए निरंतर प्रयत्न किए हैं और नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है। गढ़वाली संस्कृति के जन–जन तक प्रसार में उनकी यह पत्रिका अहम भूमिका निभाती है। इस संपादकीय यात्रा ने गणेश खुगशाल 'गणी' को गढ़वाली साहित्य और संस्कृति के कवि, लेखक, संपादक और सांस्कृतिक पुरोधा के रूप में स्थापित किया है। 'धाद' की लोकप्रियता उसके हर अंक की सफल रचनात्मक शैली को दर्शाती है। गढ़वाली काव्य और रचनात्मक क्षेत्र विस्तृत है तथा इस कड़ी को जोड़े रखने हेतु आपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से इसे और भी सम्पन्न और सशक्त किया है। आप गढ़वाली भाषा के संरक्षण, विकास और सम्मान के लिए कई साहित्यिक सभाएँ, कार्यक्रम, कार्यशालाएँ संचालित करते रहते हैं। भाषा मानकीकरण की विभिन्न कार्यशालाओं में उनकी सहभागिता तथा आठवीं अनुसूची में शामिल करने के आंदोलन में हमेशा अग्रणी रहे हैं। 'गणी' जी के रचनात्मक योगदान को लोककविता, सामाजिक मुद्दों, ग्रामीण जीवन, पहाड़ की व्यथा तथा संस्कृति के संरक्षण के रूप में एक मील का पत्थर समझा जाता है। उनकी प्रमुख कृतियों में **'वू मा बोली दे'**, **'बुढ़ापे का प्रेम'** इत्यादि शामिल हैं।

वे स्थानीय शब्दों, मुहावरों और बोलचाल की शैली का प्रयोग करते हैं, जिससे पाठक को अपनापन महसूस होता है। उनकी कविताओं और कहानियों में मानवीय भावनाओं की गहराई होती है। प्रेम, पीड़ा, संघर्ष, विरह और आशा। **'तेरी आँखि'** प्रतिनिधि कविता में आँखों के माध्यम से स्त्री की भावनाओं को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। गणी जी की रचनाएँ पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों, लोक परंपराओं, रीति–रिवाजों और सामाजिक संरचना को प्रखरता से उजागर करती हैं। वे पर्वतीय समाज की आवाज बनकर उसकी व्यथा और गौरव को साहित्य में स्थान देते हैं। ये कला चुनिन्दा कलमकारों की पहचान होती है।

वे सदैव ही गढ़वाली लोकसाहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए आगे रहते हैं। उनकी कविता और कहानियां पहाड़ व सामाजिक जीवन की तमाम संवेदनाओं को उजागर करती रही हैं। उनका लम्बा साहित्यिक अनुभव उन्हें एक अलग पहचान दिलाता है। हाल ही में उनकी केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर के **'लोक कला एवं संस्कृति निष्पादन केंद्र'** में निदेशक पद पर

नियुक्ति, सभी संस्कृति एवं भाषा प्रेमियों को एक नयी उम्मीद के रूप में उनका कार्यकाल नजर आता है। हमारी भाषा को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले यही उम्मीद हमें सृजन क्षेत्र में आगे बढ़ाती है।

गणेश खुगशाल जी की संपादकीय यात्रा करीब 30–35 वर्षों से चली आ रही है, जिसमें उन्होंने लोक संस्कृति को जीवित रखने के लिए कई कार्यक्रम और साहित्यिक आयोजन किए हैं। वे मंच संचालन, कविता गायन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भी प्रखर व्यक्तित्व तो हैं ही साथ में जो साहित्यिक संवाद का विस्तार करते हैं, उसकी पराकाष्ठा अलग ही है। उनकी लेखन शैली गढ़वाली साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखती है। उनकी शैली में लोकजीवन की सादगी, भावनात्मक गहराई और सांस्कृतिक चेतना का सुंदर समावेश होता है।

उनकी भाषा सरल होती है, लेकिन उसमें गहन अर्थ छिपे होते हैं। पाठक बिना कठिन शब्दों के भी भावों की गहराई तक पहुँच जाता है। यह शैली उन्हें आम जनमानस के बीच लोकप्रिय बनाती है। किसी भी मंच से उनको सुनना स्वयं में एक अनूठा अहसास होता है। वे जिस सरलता से पहाड़ को अपनी वाणी में ले आते हैं उस क्षण आंखों में जैसे समाज का एक चलचित्र दिख पड़ता है। उनके शब्द अपनेपन का एहसास कराते हैं। कोई अपनी भाषा से इतना प्रेम कैसे कर सकता है, यह प्रश्न भी अक्सर मन में उठता रहता है। 'गणी' जी की रचनाओं में पहाड़, नदियाँ, खेत, जंगल जैसे प्राकृतिक तत्वों का बार–बार उल्लेख होता है। प्रकृति उनके लिए केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि एक जीवंत पात्र होती है।

भाषायी उपलब्धि के क्रम में उन्होंने, उत्तराखण्ड में प्राथमिक कक्षाओं के लिए गढ़वाली भाषा में पाठ्यक्रम तैयार करने वाली समिति के संयोजक के रूप में कक्षा 1 से कक्षा 5 तक की पुस्तकें – **धगुलि, हंसुळि, छुबकि, पैजबि, झुमकि** विकसित की। अब कक्षा 6 से 8वीं तक की कक्षाओं का पाठ्यक्रम **फ्यूंलि, बुरांस** और **ग्वीराल** नाम से तैयार किया गया है। आप, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में संचालित सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम के लिए पुस्तक लेखन तथा विषय विशेषज्ञ समिति के सदस्य हैं। गत वर्ष आपको उत्तराखण्ड सरकार द्वारा साहित्यिक सम्मान **'भैरवदत्त धूलिया सम्मान'** जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार से नवाजा गया है। अपनी भाषा के प्रति आपका लगाव ठीक वैसा ही है जैसे–एक पुत्र का माँ से। आपकी कलम की स्याही से निकली हर एक बूंद, हर बार सृजन का एक नया रूप रचती है। आप उत्तराखण्ड के एक अनमोल रत्न हैं जिसके आलोक में अभी और भी कई साहित्यिक यात्राओं का आरम्भ होना है।

प्रस्तुति : डॉ0 अनूप वीरेन्द्र कठैत
लेखक व फिल्म समीक्षक
पौड़ी गढ़वाल

सीपीआरजी

पूर्व उच्च शिक्षा निदेशक प्रो.के.के पाण्डे को सलाहकार समिति में मिली नियुक्ति

उत्तराखंड के प्रो. कमल के.पांडे, पूर्व रजिस्ट्रार कुमाऊँ विश्वविद्यालय और पूर्व निदेशक उच्च शिक्षा जिन्हें "उच्च शिक्षा में छात्रों का सतत् कल्याण : सामूहिक उत्तरदायित्व" पुस्तक के लिए भी जाना जाता है, को हाल ही में नई दिल्ली स्थित प्रतिष्ठित सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च एंड गवर्नेंस (सीपीआरजी) की सलाहकार समिति का सदस्य नियुक्त किया गया है। मंडी हाउस, नई दिल्ली स्थित सीपीआरजी शिक्षा, सामाजिक नीति, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, सुशासन, क्षेत्रीय विकास, सुरक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति सहित कई क्षेत्रों में गहन शोध और प्रभावी नीति निर्माण के लिए सक्रिय है। यह संस्था विशेषज्ञों और समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़कर व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है और युवाओं को नीति निर्माण और शासन में करियर बनाने के लिए प्रशिक्षण तथा अवसर प्रदान करती है। इसके अलावा, सीपीआरजी विभिन्न कार्यक्रम, फेलोशिप, सेमिनार और संवाद आयोजित करके नीति निर्माताओं, विद्वानों और युवाओं को जोड़ता है, ताकि प्रभावी और सहभागी नीति निर्माण को बढ़ावा दिया जा सके। इस अवसर पर सीपीआरजी के निदेशक डॉ. रामानंद ने कहा, "प्रो. कमल के. पांडे जैसे अनुभवी शिक्षाविद और नीति विशेषज्ञ के जुड़ने से हमारे कार्य की गुणवत्ता और प्रभावशीलता निश्चित रूप से और बढ़ेगी। उनका मार्गदर्शन सीपीआरजी को नीति निर्माण और शोध के क्षेत्र में नई दिशा, ऊर्जा और गहनता प्रदान करेगा।"

प्रस्तुति : प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़

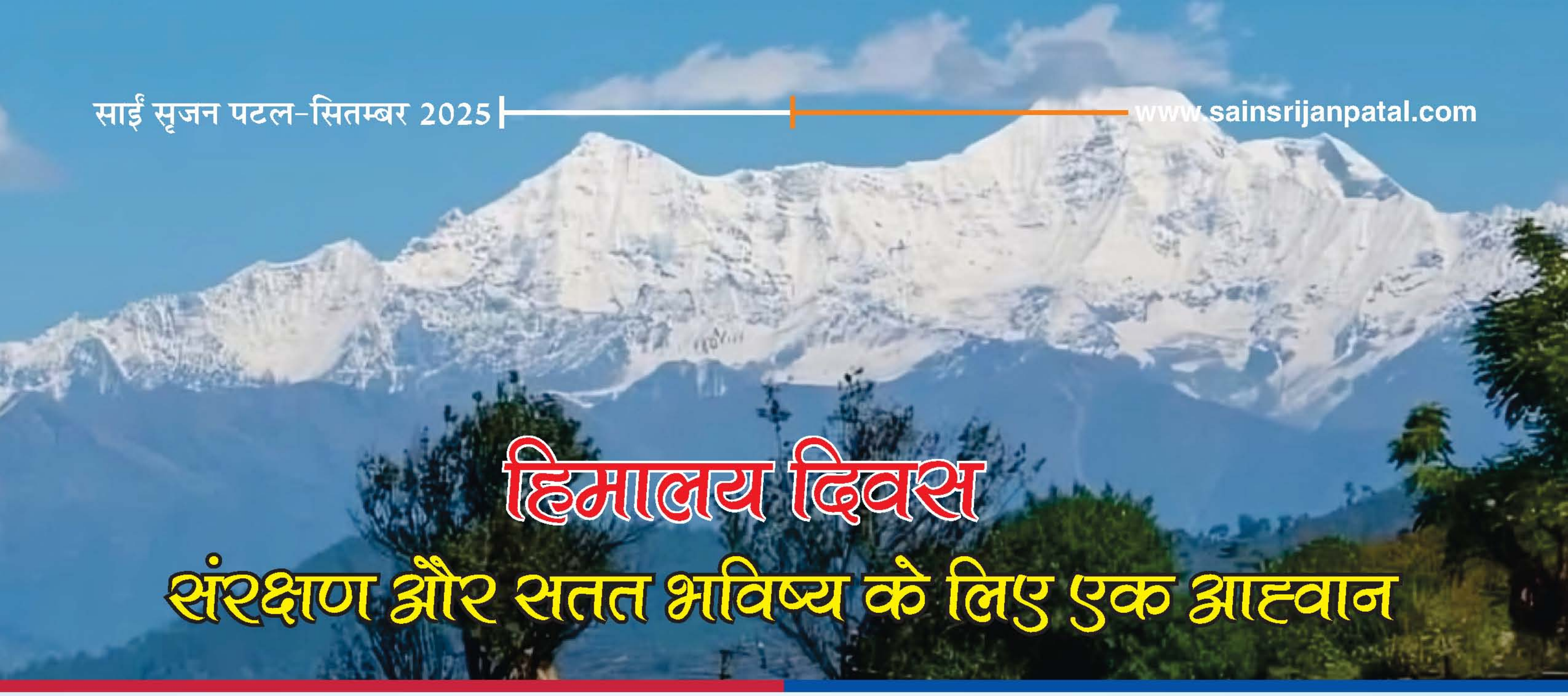

हिमालय दिवस

संरक्षण और सतत भविष्य के लिए एक आह्वान

हिमालय विश्व की सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला है जिसका पारिस्थितिक, भूगर्भीय, मौसमी और सामरिक महत्व है। हिमालय पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आबादी का एक बड़ा हिस्सा निर्भर है। वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि और अत्यधिक मानवीय गतिविधियों के कारण पूरा हिमालय क्षेत्र अस्थिर होता जा रहा है। इस संवेदनशील क्षेत्र को उचित प्रबंधन की आवश्यकता है और आम जनमानस में जागरूकता भी नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से पद्मभूषण अनिल प्रकाश जोशी के नेतृत्व में पर्यावरणविदों के एक समूह ने वर्ष 2010 में 9 सितंबर को हिमालय दिवस मनाने का निर्णय लिया। यद्यपि आधिकारिक रूप से वर्ष 2015 से 9 सितंबर को हिमालय दिवस मनाया जा रहा है परंतु इसकी शुरुआत 2010 से ही हो गई थी।

हिमालय दिवस मनाने की आवश्यकता इस बात का द्योतक है कि हिमालय संकटग्रस्त है। वर्तमान में इस क्षेत्र को अनेक प्राकृतिक आपदाओं को झेलना पड़ रहा है। चूंकि हिमालय एक नवीन–वलित पर्वतमाला है और भौगोलिक दृष्टि से यह सक्रिय है इसलिए इस क्षेत्र में विकास संबंधी कोई भी निर्णय यहां की पारिस्थितिकी और धारक क्षमता को ध्यान में रखकर लेना होगा। इस क्षेत्र में बादल फटने (100 मिलीमीटर प्रति घंटे की बारिश) की घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है जो जान–माल की हानि भी कर रही है। भूस्खलन और नदियों में बाढ़ की घटनाएं भी बढ़ती जा रही हैं। इसका प्रमुख कारण जल धाराओं के आसपास बढ़ती मानवीय गतिविधियां हैं। हिमालय दिवस जलवायु परिवर्तन, अनियोजित निर्माण, वनों की कटाई, और प्राकृतिक जल निकासी मार्गो में अवरोध जैसे कारकों के कारण हिमालय के सामने आने वाली पारिस्थितिक समस्या और सामाजिक आर्थिक चुनौतियों को उजागर करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। हिमालय दिवस का उद्देश्य सामुदायिक सहभागिता एवं वैज्ञानिक ज्ञान को बढ़ावा देना और भावी पीढ़ियों के लिए हिमालय के महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र और अद्वितीय विरासत की रक्षा के लिए पर्यावरण संवेदनशील नीतियों की वकालत करना है।

हिमालय एक पर्वत श्रृंखला मात्र नहीं है बल्कि एक ऐसा प्राकृतिक कारक है जो पूरे भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु, जल–विज्ञान और जैव–विविधता को प्रभावित करता है। इसे तीसरा ध्रुव भी कहा जाता है क्योंकि उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव के बाद पृथ्वी पर यह तीसरा सबसे बड़ा बर्फ का भंडार है। हिमालय के ग्लेशियर गंगा, सिंधु एवं ब्रह्मपुत्र जैसी प्रमुख नदी प्रणालियों को जल प्रदान करते हैं। इन नदियों पर एक बड़ी आबादी अपनी आवश्यकताओं और आजीविका के लिए निर्भर है। साथ ही हिमालयी क्षेत्र में जंतु और पादप दोनों समूह की अत्यधिक जैव विविधता पाई जाती है जो इसे विश्व की प्रमुख जैव विविधता हॉट–स्पॉट में अग्रणी स्थान दिलाता है। हिमालय के साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत भी जुड़ी हुई है। इस क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से विभिन्न धर्मों के पवित्र स्थान अवस्थित हैं। हिमालय एक विशाल पर्वत श्रृंखला होने के कारण प्राकृतिक ढाल के रूप में कार्य करता है जो भारतीय उपमहाद्वीप को ठंडी हवाओं से बचाता है और मानसून पैटर्न को प्रभावित करता है जिससे एक विशाल क्षेत्र की जलवायु को आकार मिलता है।

अपने अत्यधिक महत्व के बावजूद हिमालय बढते खतरों का सामना कर रहा है जो उसके नाजुक पारिस्थितिकी–तंत्र और उन पर निर्भर समुदायों को खतरे में डाल रहा है। हिमालय जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील है। वैश्विक ताप वृद्धि के कारण ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं जिससे भविष्य में लाखों लोगों के लिए

जलापूर्ति खतरे में पड़ती जा रही है। साथ ही असामान्य बारिश से नवनिर्मित ग्लेशियर झीलों के फटने से बाढ़ का खतरा भी बढ़ गया है और अप्रत्याशित वर्षा, पश्चिमी विक्षोभ का असामान्य पैटर्न और बढ़ता तापमान पारिस्थितिक स्थिरता पैदा कर रहा है। अनियोजित भवन–निर्माण, सड़कों एवं बड़े पैमाने पर जल विद्युत परियोजनाओं जैसी बुनियादी ढांचे का निर्माण हिमालयी भौगोलिक संरचना पर दबाव डाल रहा है। इन गतिविधियों से भूस्खलन, मिट्टी का कटाव और भूकंपीय संवेदनशीलता का खतरा बढ़ जाता है। बढ़ती जनसंख्या का दबाव और वैश्विक बाजारों तक बढ़ती पहुंच हिमालयी संसाधनों के अत्यधिक दोहन को बढ़ावा दे रही है। अवैध कटाई, अस्थिर कृषि पद्धतियां और औषधीय पादपो का संग्रह जंगलों और बुग्यालों को नष्ट कर रहा है। पर्वतीय राज्यों में पर्यटन आय का एक प्रमुख स्रोत है। हाल के दिनों में पर्यटन में वृद्धि आर्थिक रूप से लाभप्रद है परंतु इसके कारण अपशिष्ट प्रबंधन चुनौती पैदा कर रहा है। बढ़ते पर्यटन के साथ ही हिमालयी क्षेत्र में प्लास्टिक और कचरा प्रदूषण का कारण बन रहे हैं। पर्यावास विखंडन, मानव–वन्य जीव संघर्ष और अवैध वन्य जीव व्यापार प्रजातियों के नुकसान का कारण बन रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन देसी प्रजातियों के आवासों को बदल रहा है एवं कुछ प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के अनुसार भारत का लगभग 12.6 प्रतिशत भूभाग भूस्खलन के लिए संवेदनशील है।राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण हिमालयी क्षेत्र को सर्वाधिक भूस्खलन–प्रवण क्षेत्र के रूप में अधिसूचित कर चुका है।भू–वैज्ञानिकों का मत है कि खड़ी ढलानें, टेक्टोनिक गतिविधियां, तीव्र बारिश एवं चट्टान–मिट्टी की संरचना की नाजुक प्रकृति खतरे को दिन–प्रतिदिन बढा रही है। विकास कार्यों के लिए होने वाली मानवीय गतिविधियां प्राकृतिक परिदृश्य और ढलान स्थिरता को बदल देती हैं, जिससे इस क्षेत्र में भूस्खलन की संभावना बढ़ जाती है। उचित अभियांत्रिकी तकनीक एवं ढलान प्रबंधन के साथ बुनियादी ढांचे का निर्माण भूस्खलन को रोक सकता है। इस क्षेत्र में शहरीकरण की रफ्तार भी काफी तेज है। इन परिवर्तनों ने इस क्षेत्र की धारक क्षमता को प्रभावित किया है। ऐसा माना जा रहा है कि जलवायु परिवर्तन की तुलना में भूमि उपयोग के स्वरूप का बदलाव आपदा के लिए ज्यादा उत्तरदायी है। नदियों के आसपास भवन निर्माण भी आपदा को आमंत्रित कर रहा है।

हिमालय दिवस का आयोजन मात्र एक प्रतीकात्मक संकेत नहीं है अपितु एक स्थाई भविष्य की दिशा में सामूहिक कार्यवाही को संगठित करने का एक रणनीतिक प्रयास है। हिमालयी क्षेत्र में भवन–निर्माण में पर्यावरण संवेदनशील नियोजन नितांत आवश्यक है जिससे प्रभावित भूमि उपयोग और धारक क्षमता के अनुसार ही निर्माण कार्य हों। साथ ही संरक्षण के प्रयास में स्थानीय समुदाय की आजीविका, निर्णयों में उनके विचारों को शामिल करना और उनके पारंपरिक ज्ञान का उपयोग भी महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। साथ ही पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों को कम करके पर्यावरणीय फुटप्रिंट्स को भी कम करना आवश्यक है। सभी बुनियादी ढांचे से संबंधित परियोजनाओं में कठोर पर्यावरणीय प्रभाव आकलन के द्वारा प्रभावों का विस्तृत अध्ययन भी हिमालय संरक्षण में एक प्रमुख कदम साबित हो सकता है। हिमालय का भविष्य केवल एक क्षेत्रीय विषय नहीं है अपितु एक वैश्विक चिंता का विषय है। चूंकि हिमालय का विस्तार भारत के साथ–साथ चीन, नेपाल और भूटान तक है इसलिए हिमालय के संरक्षण के लिए एक वैश्विक नीति की आवश्यकता है। किसी एक क्षेत्र में संतुलन हिमालय के दूसरे क्षेत्र को भी प्रभावित करेगा इसलिए इन देशों को आपसी सामंजस्य के साथ हिमालयी क्षेत्र में संतुलित और नियोजित विकास योजनाएं अपनानी होंगी। साथ ही आपदा प्रबंधन प्रणालियों को सशक्त बनाना भी नितांत आवश्यक है। प्राकृतिक आपदाओं से नुकसान कम हो इसके लिए उन्नत आपदा प्रबंधन–तंत्र के साथ ही आधारभूत ढांचा को विकसित करना आवश्यक है। साथ ही विकास की योजनाओं में रिस्क असेसमेंट करना भी आवश्यक है ताकि आर्थिकी और पारिस्थितिकी का सामंजस्य बिठाया जा सके।

विकास और प्रकृति का सामंजस्य बिठाकर ही सतत विकास के वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इस पर्वत श्रृंखला के सामने आने वाली चुनौतियां–जलवायु परिवर्तन से लेकर सतत विकास तक–पर्यावरणीय प्रबंधन और प्रकृति के साथ हमारे संबंधों के व्यापक मुद्दों को दर्शाती है। हिमालय दिवस मनाकर हम न केवल हिमालय का सम्मान कर रहे हैं बल्कि संरक्षण और स्थिरता के सिद्धांतों के लिए खुद को फिर से प्रतिबद्ध कर रहे हैं जो पूरी मानवता की भलाई के लिए महत्वपूर्ण है। हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि सहयोगात्मक प्रयास और बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ हिमालय के संरक्षण में बढ़–चढ़कर योगदान दें।

प्रस्तुति : डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)

जागड़ा पर्व : जौनसार-बावर में आस्था और लोकसंस्कृति का संगम

उत्तराखंड की धड़कनें जब लोकगीतों और ढोल–दमाऊँ की थापों पर गूंज उठती हैं, तो समझ लीजिए कि पर्वतों के देवता जाग उठे हैं। जौनसार–बावर की पवित्र धरा पर महासू देवता की आराधना का सबसे बड़ा अवसर है जागड़ा पर्व। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि लोकजीवन की आत्मा है, जो पीढ़ियों से पर्वतवासियों को उनकी संस्कृति, परंपरा और आस्था से जोड़े हुए है। इस वर्ष 26 अगस्त 2025 को जागड़ा पर्व का आयोजन महासू धाम, हनोल सहित पूरे जौनसार–बावर क्षेत्र के प्रमुख मंदिरों हुआ। भाद्रपद मास की तृतीया और चतुर्थी तिथि पर पड़ने वाला यह पर्व गणेश चतुर्थी के साथ मेल खाता है और इसी संगति में देवभूमि के घर–घर में उत्साह की लहर दौड़ जाती है।

दो दिवसीय इस मेले में हजारों श्रद्धालु शामिल होते हैं। मंदिरों को फूलों, विशेषकर लखनऊ से मंगाए गए गेंदों से सजाया गया है, जो वातावरण को दिव्य बना देते हैं। रातभर श्रद्धालु जागरण कर देवता की स्तुति करते हैं, पारंपरिक गीत गाते हैं और ढोल–दमाऊँ की गूंज से आकाश गुंजायमान हो उठता है। अगले दिन का दृश्य सबसे मोहक होता है–जब महासू देवता की पालकी गर्भगृह से बाहर आती है, डोल–नगाड़ों की थाप के साथ शोभायात्रा निकलती है। पालकी को पवित्र स्रोतों तक ले जाकर स्नान कराया जाता है। श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है, हर कोई देवता के दर्शन और आशीर्वाद के लिए व्याकुल दिखता है।यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर का उत्सव है। लोकनृत्य, गीत–संगीत, परंपरागत खेल और नाट्य प्रस्तुतियाँ इस मेले की विशेष पहचान हैं। देहरादून सहित आसपास के क्षेत्रों से कलाकार यहाँ आकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। थैना, लखस्यार, कोटी बावर, बिसाई, रागी, बुलार, कोटा तपलाड़ जैसे मंदिरों से देव डोलियाँ निकलती हैं, जो पूरे गाँवों में घुमाई जाती हैं।हनोल का महासू मंदिर नवीं शताब्दी का भव्य धरोहर है, जिसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने संरक्षित किया है। यह मंदिर केवल पत्थरों की रचना नहीं, बल्कि आस्था का प्रतीक है। स्थानीय मान्यता के अनुसार महासू देवता न्याय के देवता हैं, जिनकी शरण में जाकर पीड़ित को सच्चा न्याय मिलता है। यही कारण है कि उनके प्रति लोगों की अटूट भक्ति है। जागड़ा पर्व जौनसार–बावर की आत्मा है।

यह पर्व हमें बताता है कि परंपराएँ केवल इतिहास की बातें नहीं, बल्कि जीवित संस्कृति हैं, जो हमें अपनी जड़ों से जोड़ती हैं। इस वर्ष का जागड़ा पर्व न केवल आस्था का महाकुंभ था बल्कि संस्कृति और लोकजीवन का उत्सव भी था। यदि आप देवभूमि की वास्तविक पहचान से रूबरू होना चाहते हैं, तो जौनसार–बावर की यात्रा अवश्य करें और इस पर्व का हिस्सा बनें। यहाँ आकर आप पाएँगे कि आस्था केवल मंदिरों में नहीं, बल्कि लोगों की मुस्कानों, उनके गीतों और सामूहिक उल्लास में भी बसती है। जागड़ा पर्व– जहाँ देवता, प्रकृति और लोकजीवन एक सूत्र में बंध जाते हैं।

प्रस्तुतिः
मनीष कुमार,
एम.ए. इतिहास, UGC NET, USET
कनिष्ठ लिपिक, राजकीय महाविद्यालय
चकराता, देहरादून

स्पर्श गंगा शिक्षाश्री पुरस्कार-2025 की घोषणा

नौ प्रेरणादायी शिक्षक होंगे सम्मानित

हिमालयन एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट सोसायटी (हर्ड्स) ने शिक्षक दिवस के अवसर पर इस वर्ष के स्पर्श गंगा शिक्षाश्री पुरस्कार–2025 के चयनित नामों की घोषणा की है। यह पुरस्कार गत पाँच वर्षों से उत्तराखंड के उन प्रेरणादायी शिक्षकों और समाजसेवियों को प्रदान किया जा रहा है, जिन्होंने शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और समाजसेवा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। स्पर्श गंगा शिक्षाश्री पुरस्कार– 2025

1. **शिक्षा में नवाचार (Innovation in Education)**
   शिक्षण–पद्धति, तकनीकी उपयोग या रचनात्मक प्रयोगों के माध्यम से शिक्षा को सरल, प्रभावी और प्रेरणादायी बनाने वाले शिक्षकों को यह सम्मान। **चयनित व्यक्तित्व :डॉ. ममता आर्या, एसोसिएट प्रोफेसर, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय**
2. **पर्यावरण संरक्षण (Environmental Conservation)**
   जल, जंगल, जमीन और जैव विविधता की रक्षा कर समाज को पर्यावरण चेतना से जोड़ने वाले प्रयासों के लिए। **चयनित व्यक्तित्व : श्री बीरेंद्र दत्त गोदियाल, सहायक अध्यापक, राजकीय जूनियर हाई स्कूल, पाटुली (थलीसैंण)**
3. **समाज सेवा (Social Service)**
   वंचितों और कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित कार्यों हेतु
   चयनित व्यक्तित्व : श्री धीरेंद्र जोशी, प्रवक्ता, राजकीय इंटर कॉलेज डोकरा, भुजियाघाट, नैनीताल
4. **सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन (Cultural Preservation & Promotion)**
   लोककला, लोकभाषा और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित कर नई पीढ़ी तक पहुँचाने में योगदान के लिए
   चयनित व्यक्तित्व : श्रीमती अनुराधा पांडेय, प्रवक्ता, पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, कोटाबाग
5. **ग्रामीण विकास एवं आजीविका संवर्धन (Rural Development & Livelihood Promotion)**
   गाँवों में शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार और टिकाऊ आजीविका मॉडल विकसित करने वाले प्रयासों हेतु। **चयनित व्यक्तित्व : प्रो. जय प्रकाश जायसवाल, विभागाध्यक्ष (आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन), जीबी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर**

स्पर्श गंगा शिक्षाश्री प्रशस्ति पत्र–2025 हेतु चयनित व्यक्तित्व।

- **प्रो. जगमोहन सिंह नेगी, पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर (नैनीताल)**
- **डॉ. कुंवरपाल सिंह, सहायक प्राध्यापक, राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर**
- **प्रो. प्रभाकर मणि काला,पूर्व कुलसचिव, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड**
- **डॉ. महेंद्र सिंह पंवार, प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मालदेवता, रायपुर,दे.दून**

हर्ड्स के सचिव एवं स्पर्श गंगा अभियान के राष्ट्रीय समन्वयक प्रो.अतुल जोशी ने बताया कि चयनित शिक्षकों को यह सम्मान उनके शैक्षिक नवाचार, शोध–कार्य और सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखते हुए प्रदान किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि आगामी 17 दिसम्बर को 'स्पर्श गंगा दिवस' पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम में "स्पर्श गंगा शिक्षाश्री पुरस्कार'' हेतु चयनित शिक्षकों को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र और 11,000 रुपये की नगद राशि से सम्मानित किया जाएगा तथा 'स्पर्श गंगा प्रशस्ति पत्र–2025' हेतु चयनित शिक्षकों को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र से विभूषित किया जाएगा।

प्रस्तुति : प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़

आस्था

चितई के गोलू देवता

''मिलता है जहां न्याय, वह दरबार यही है।''

उत्तराखण्ड को देवभूमि कहा जाता है । राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक देवी देवताओं का वास है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार पूजित देवी देवता अलग अलग क्षेत्रों में निवास करते हैं । प्रत्येक देवता का अनेक कथाओं के अनुसार अवतरण होने का साम्य स्थापित किया जाता है । गढ़वाल क्षेत्र में चार धाम, धारी देवी, सुरकंडा देवी, चंद्रबदनी देवी , जौनसार क्षेत्र में महासू देवता आदि अनेक नाम प्रसिद्ध हैं, जिनका अस्तित्व क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्व है। इसी प्रकार कुमाऊँ क्षेत्र में पूर्णागिरी देवी, दूनागिरी देवी, नंदादेवी, पाषाण देवी, गोलू देवता आदि देवी देवता कुमाऊँ के रक्षक हैं।

यदि विशेष रूप से अल्मोड़ा की बात की जाए तो कुमाऊँ क्षेत्र में इसे पौराणिक नगरी के रूप में जाना जाता है। यहाँ पर गणेश, आठ भैरव, नौ देवियों के मन्दिर, इस क्षेत्र के प्रमुख देवी देवता हैं। परन्तु सर्व प्रसिद्ध गोलू देवता का मन्दिर कुमाऊँ क्षेत्र की पहचान बनाता है। अल्मोड़ा से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर चितई नामक स्थान पर स्थित गोलू देवता का मन्दिर कुमाऊँ के रक्षक देवता के रूप में प्रसिद्ध है। गोलू देवता को न्याय के देवता के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहां पर किसी भी प्रकार के न्याय के लिए मन्नत मांगी जाती है और मन्नत पूरी होने पर श्रद्धा स्वरूप घंटी चढ़ाई जाती है। इसीलिए इसे घंटियों का मन्दिर भी कहा जाता है। मन्दिर में न्याय के लिए अपनी फरियाद को स्टांप पेपर पर लिख इस आशा के साथ कर देवता के चरणों में अर्पित किया जाता है कि वे इस पर न्याय करते हुए अपना निर्णय देंगे।

गोलू देवता को न्याय देवता के रुप में पूजे जाने के पीछे एक लोककथा प्रचलित है। इस कथा के अनुसार वो एक राजा के पुत्र थे। राजा की तीन रानियां थीं और उनकी मां राजा की सर्वप्रिय रानी थीं। उनके जन्म लेते ही उनकी सौतेली माँ ने उन्हें नदी में फेंक दिया और उसकी जगह एक पत्थर रख दिया जिस कारण उनकी मां का अपमान हुआ। समय व्यतीत होने पर उन्होंने राज से पर्दा उठा कर न्याय की स्थापना की। बाल्यावस्था से ही वो छोटी–छोटी बातों में न्याय करते रहे और इस प्रकार न्याय के लिए स्थापित होते गए और देवत्व का स्थान प्राप्त किया। बाल्यावस्था में वो लकड़ी के घोड़े पर सवार हो कर न्याय करते थे इसीलिए उन्हें घोड़े पर सवार स्थापित किया गया है। घोड़ा इस बात का प्रतीक है कि देवता न्याय के लिए भ्रमण करते हैं। साथ ही वे सफेद कपड़ों, सफेद पगड़ी और सफेद शॉल धारण करते हैं। कुमाऊँ क्षेत्र में इन्हें भगवान शिव के अवतार (गौर भैरव) के रूप में भी पूजा जाता है। माना जाता है कि चितई मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में चंद वंश के सेनापति ने करवाया था। चितई के अतिरिक्त गोलू देवता के मन्दिर नैनीताल के पास घोड़ाखाल , अल्मोड़ा जिले के पास गैराड तथा चम्पावत पर भी स्थित हैं जिनके स्थापत्य से सम्बन्धित अनेक कथाएं प्रचलित हैं। गोलू देवता चाहे किसी भी स्थान पर स्थापित हों, उनके प्रति आस्था व विश्वास अटूट रहता है। विशेष रूप से चितई के मन्दिर में प्रवेश करते ही आपको सैकड़ों की संख्या में घण्टियां व स्टाम्प पेपर दिखाए देंगे। न्याय के देवता के प्रति लोगों की आस्था व विश्वास के कारण के कारण आज गोलू देवता का मन्दिर विश्व प्रसिद्ध है।

अपने बाल्यकाल से ही मैने देवता पर विश्वास के कारण अपनी अनेक समस्याओं को उन्हें समर्पित किया और समाधान भी पाया है। सुख और दुख दोनों में उन्हें याद किया है। इस आस्था व विश्वास को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम सच्ची श्रद्धा व विश्वास के साथ ही अपनी मन्नत देवता के सामने रखें। केवल रील बनाने और मात्र दिखावा करने के लिए ईश्वर को इस्तेमाल न करें।

प्रस्तुति
डॉ. विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

हिन्दी भाषा : उच्चारण व लेखन में एकरूपता है जिसकी विशेषता

सितंबर माह के आते ही प्रत्येक संस्थान में हिन्दी अथवा राजभाषा दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा मनाया जाता है। 14 सितंबर सन् 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी। इसलिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

संविधान के अनुच्छेद 343 में संघ की भाषा से सम्मानित किया गया।जिसकी लिपि देवनागरी है और जो शौरसैनी अपभ्रंश से उत्पन्न हुई है। संविधान के अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तक हिन्दी भाषा से संदर्भित अनेक प्रावधान रखे गए। यह कितने सफल हुए,कितने असफल यह सोचनीय विषय है।हिन्दी भाषा जो कि खड़ी बोली का विकसित रूप है इसकी मुख्यतः पांच उप भाषाएं एवं लगभग 18 बोलियां हैं। देवनागरी लिपि जो स्वयं में वैज्ञानिकता लिए हुए हैं, इसलिए इस लिपि में समग्र ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता है। उच्चारण एवं लेखन में एकरूपता इसकी विशेषता है।प्रत्येक ध्वनि के लिए एक चिन्ह निश्चित है। वैज्ञानिक लिपि वही मानी जाती है, जिसमें यह स्पष्ट हो। देवनागरी लिपि सरल एवं कलात्मक है।

हिन्दी भाषा को भारतीय जनमानस विविध रूपों में प्रयोग करता है राजभाषा के रूप में सरकारी कार्यालय में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी राष्ट्रभाषा के लिए संघर्षरत है। हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है। जब दो राज्यों के लोग एक दूसरे की बोली को न समझे तो संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी अपना कार्य करती है। संचार भाषा के रूप में हिन्दी का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान में श्रव्य माध्यम, दृश्य मध्य एवं मुद्रण माध्यम के द्वारा भी हिन्दी का अपना वर्चस्व कायम है। तकनीकी एवं वैज्ञानिक भाषा के रूप में भी हिन्दी ने अपना वर्चस्व स्थापित किया है। वर्तमान में हिन्दी भाषा मात्र साहित्य की ही नहीं बल्कि रोजगार की भाषा बन चुकी है, जिसने रोजगार के कई द्वार खोलें हैं।

प्रयोजनमूलक हिन्दी अर्थात जिस भाषा का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन या उद्देश्य की सिद्धि के लिए किया जाए उसे प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं। हिन्दी भाषा में दूसरा शब्द फंक्शनल लैंग्वेज के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, जिसका अर्थ है जीवन की विविध विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली भाषा। आज प्रयोजनमूलक हिन्दी का तात्पर्य हिंदी के उस रूप से है जो कार्यालय ,प्रयोगशालाओं में प्रशासन में, व्यवसाय में प्रयोग की जाती है। कार्यालय हिन्दी के अंतर्गत कोई भी विद्यार्थी पत्र लेखन ,संक्षेपण, टिप्पण ,पल्लवन एवं औपचारिक पत्र ,अनौपचारिक पत्र लेखन, पारिभाषिक शब्दावली, वैज्ञानिक शब्दावली एवं हिन्दी कंप्यूटर की जानकारी रख सकता है। पत्रकारिता के अंतर्गत समाचार लेखन, संपादक, प्रूफरीडर, रिपोर्टर ,संवाददाता इत्यादि में भी रोजगार के अवसर हैं। मीडिया लेखन के अंतर्गत सूचना एवं प्रौद्योगिकी में रेडियो में अनेक अवसर हैं। रेडियो में प्रसारित कार्यक्रम रेडियो लेखन, रेडियो बुलेटिन ,समाचार लेखन ,रेडियो नाटक लेखन, उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन लेखन, फीचर लेखन, रिपोर्ताज इत्यादि में भी अधिक अवसर हैं।

दृश्य–श्रव्य माध्यम अर्थात टेलीविजन की बात करें तो टेलीविजन में समाचार लेखन, उदघोषक, संचालक, टेली ड्रामा, पटकथा लेखन ,डॉक्यूमेंट्री, संवाद लेखन एवम साहित्य की विधाओं का दृश्य के माध्यम से रूपांतरण ,अनुवाद, विज्ञापन इत्यादि में अनेक अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

भारत ही नहीं अपितु नेपाल, भूटान, श्रीलंका पाकिस्तान, सिंगापुर मलेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया, मॉरीशस, फिजी, अमेरिका, ब्रिटेन, न्यू जीलैंड इत्यादि देशों में भी हिन्दी में का प्रयोग हो रहा है। हम भारत में बैठकर हिन्दी भाषा की दशा और दिशा को लेकर मंथन करते हैं, लेकिन मेरा मानना है कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है, देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी इसका बहुत महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रस्तुति: डॉ0 शोभा रावत
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय,
कल्जीखाल, पौड़ी गढ़वाल

मेहनतकश

माटी के लाल 'मोहन सिंह' पाल

पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड की जनांकिकी पलायन से लगातार प्रभावित हो रही है। पलायन से यहां की पारंपरिक और जैविक खेती करने वालों की जनसंख्या भी लगातार घटती जा रही है। पहाड़ों पर कामकाजी युवा जनसंख्या पलायन कर रही है और पहाड़ी गांवों में केवल बुजुर्ग जनसंख्या रहने से जनसंख्या वृद्धि दर धीमी गति से बढ़ रही है या ऋणात्मक वृद्धि हो रही है। स्थिति इतनी विकट है की 2021 की जनगणना में 1700 से अधिक गांव घोस्ट विलेज (भूतिया गांव) की श्रेणी में शामिल हैं जहां कोई भी स्थाई जनसंख्या नहीं रहती है। परन्तु इस दौर में जनपद रुद्रप्रयाग में अपनी माटी का एक सिपाही ऐसा भी है जो लगातार 65 सालों से न केवल पारंपरिक खेती कर रहे हैं बल्कि अपनी बैलों की जोड़ी से अपने पुरखों की इस जमीन को आबाद कर रहे हैं साथ ही अपनी रोजी–रोटी भी चला रहे हैं।

जनपद रुद्रप्रयाग में श्रीकोट गांव निवासी मोहन सिंह (मोलू), जिनकी उम्र वर्तमान में 78 साल है, बताते हैं की वे वर्ष 1960 से इस गांव के खेतों में लगातार हल जोतने का कार्य कर रहे हैं। हल का ठेका करने के कारण क्षेत्र में लोग उन्हें ठेकेदार के नाम से भी जानते हैं। आज भी वे गांव में 13 परिवारों के खेतों में हल चलाते हैं और प्रत्येक फसल पर 40 हजार रुपये तक की कमाई भी करते हैं। पारंपरिक विरासत को बढाते–बढ़ाते उनका पूरा जीवन हल, नसूड़े बनाने में ही बीत गया है। वर्तमान तकनीकी युग में लोग पहाड़ों पर भी टैक्टर से खेती करने लगे हैं। मोहन सिंह बताते हैं कि हमारे गांव में कभी 20 से 25 बैलों की जोड़ी हुआ करती थी, लेकिन आज पूरे गांव में केवल उन्हीं के पास एक जोड़ी बैल हैं। गांव के एक दो काश्तकारों ने हाथ से चलाने वाले टैक्टर का प्रयोग किया लेकिन सीढ़ीनुमा छोटे–छोटे खेत होने और रास्ता न होने के कारण वह प्रयोग सफल नहीं रहा। वे अपने इन बैलों को 14 साल पहले 8500 रूपये में लाए थे तब ये दो दांत (चार साल) के थे अब तक इन बैलों से उन्होनें 8 लाख 40 हजार रूपये कमा दिए हैं। इस प्रकार के बैलों की जोड़ी आज तीस से चालीस हजार रूपये में आती है। एक समय वह भी था जब उसके पास ठुल्ला भाभर्या बल्द (बड़े बैल) थे सफेद रंग के ये बैल जब खांकर की पेटी गले में बजाते हुए हल चलाते थे तो उसका नजारा ही कुछ और होता था। बैलों को वे मुख्य रूप से हरी घास, मुठेंडे (जौ के आटे से बने), पींडू (झंगोरे से बना), सरसों के तेल व घी की थ्वली (थ्वली बांस की लकड़ी से बनी होती है जिससे बैलों को तरल पेय पिलाते हैं) आदि खाने में देते हैं जिससे बैल हल को मजबूती से खींचते हैं।

मोहन सिंह ठेकेदार आगे बताते हैं कि पहले सभी कृषि यंत्र लकड़ी के बने होते थे जो जल्दी टूट भी जाते थे परंतु अब कृषि विभाग के यंत्र धातु के मजबूत बने होते हैं। ये हल जो वे उपयोग कर रहे हैं वह दो से ढाई हजार रूपये में मिलता है। कृषि विभाग से उन्हें बीज या कृषि यंत्रों में कोई मदद नहीं मिलती है परंतु उन्होनें सुना है कि कृषि और किसान मेलों में सब्सिडी पर कृषि का सामान मिलता है। वे बताते हैं की पहले इन यंत्रों में जो लकड़ी प्रयोग की जाती थी उनमें प्रमुख रूप से मोरू की लाट (हरीस), सांदण के कूड़ और मया मूंडी, मोल के

कंदेले (जूआ), बांझ के नसूड़े, मया घांघे आदि बनाए जाते थे। इन यंत्रों को बनाने के लिए कई बार वे 50 किलोमीटर दूर जंगलों तक भी जाते थे। एक बार तो वे भद्या (सकलाना) के जंगलों से 8 नसूड़े एक साथ लाए थे। लेकिन परंपरागत खेती के कुछ यंत्र अब विलुप्त भी हो गए हैं जैसे ढिकारू (जुते हुए खेत में मिट्टी के ढेले तोड़ने हेतु), मुस्का (बैलों के मुंह पर हल जोतते समय लगाने हेतु), लोहमयु (झंगोरे, कोदे की गुड़ाई हेतु) आदि अब विलुप्त होते जा रहे हैं। गांव के इन खेतों में वे गहथ, झंगोरा, कोदा, रैंस, ऊड़द, गेंहू, सरसों, धान आदि फसल बोते हैं लेकिन माटी के इस लाल का अनुमान है कि आने वाले पांच से सात सालों में परंपरागत खेती सब समाप्त हो जाएगी जंगली सूअर और बंदर बची–खुची खेती को समाप्त करने में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन वे यह भी अनुमान लगा रहे हैं की एक समय ऐसा भी आएगा जब पहाड़ का यह मानव अपनी जन्मभूमि को याद करेगा और रिवर्स पलायन करेगा। सुना है कि कोविड के बाद पौड़ी में कई लोग अपने घरों पर वापस आकर अपनी खेती को आबाद कर रहे हैं।

जब मोहन सिंह ठेकेदार से यह प्रश्न किया गया की क्या आने वाली पीढ़ी ये काम करेगी तो वे कहते हैं कि बिल्कुल नहीं। जब तक भुखमरी नहीं आती तब तक कोई हाथ पैर नहीं चलाता। हमारे बुजुर्ग बताते थे की उन्होंने भुखमरी में मोल (मेलु) और तिमले जांदरे में पीसे और खाए तब जाकर अपना और बच्चों का जीवन बचाया। ऐसी ही परिस्थितियों में आने वाली पीढ़ी अपनी इस परंपरागत कृषि की तरफ आकर्षित हो सकती है। अपनी जवानी के दिनों को याद करते हुए वे कहते हैं की एक समय था जब गांव में हल चलाने के लिए विशेष मुहूर्त (दिन) निकालते थे उसी दिन बैलों के कंधे पर जूआ रखा जाता था अब तो केवल औपचारिकता रह गई है। धान की रोपाई परंपरागत ढोल–दमाऊं की थाप पर की जाती थी। लुंगालों दिन जीतू बगड़वाल की गाथा बगड़वाली पर लगाया जाता था। रोपणी के दिन रोटी, चना, सूजी आदि खेतों में ही खाई जाती थी। दल्याड़ा, गथवाड़ा, रोपाड़ा, झंगरयाड़ा, कोदाड़ा आदि नाम अब केवल यादों में ही रह जाएंगे। असूज (आश्विन) के महीने फड़ींग का हल सबसे कठिन तथा जेठ बैसाख की भौंरी का हल आसान रहता है।

एक समय ऐसा भी था जब खेतों में पुरूष तथा महिलायें बराबर का कार्य करती थीं लेकिन धीरे–धीरे पहाड़ों पर कृषि कार्य ज्यादातर महिलाएं ही कर रही हैं। पुरूष केवल हल चलाने तक सीमित रह गए हैं। इस प्रकार पहाड़ों पर परंपरागत खेती धीरे–धीरे समाप्त होती जा रही है यदि परिवर्तन के साथ नई पीढ़ी ने इसे समायोजित नहीं किया तो यह केवल यादों में ही रह जाएगी। मोहन सिंह ठेकेदार जैसे परंपरागत खेती करने वाले किसान न केवल अन्नदाता हैं बल्कि प्रकृति के संरक्षक, परंपरागत ज्ञान के संवाहक, और हमारे पुरखों की सांस्कृतिक धरोहर और सतत विकास के संरक्षक भी हैं। यह कृषि उनकी अर्थव्यवस्था के साथ–साथ एक जीवनशैली भी है।

प्रस्तुति–
कीर्तिराम डंगवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

कविता

सड़क से डरता है जंगल !

पहले पहल जैसे ही जंगल ने सुना
सड़क आ रही है, जंगल डरने लगे
पहले पहल सड़क आने की खबर से
धान, मंडुवा , झंगोरा और चीणा के
खेत और घरों की तोरी , लौकी और काखडी
की बेलें सूखने लगी !
पहले पहल जब गाँव के युवाओं ने सुना
सड़क आ रही है , उन्होंने गाँव के
आने जाने के रास्ते छोड़ दिए !
स्कूल के मास्टरों ने गाँव के स्कूल में
डाक्टरों ने गाँव के अस्पताल में
सरकारी नौकरियों के परिवार वालों ने
खोली , तिबारी , जंगले और ओखली वाले
घर , आँगन और पानी का धारा छोड़ दिया !
सड़क के आने से सब कुछ यही नहीं रुका
सारा जंगल, खेतों की सारियां और क्यारियां
वन देवियों के मंदिर, पित्रकूड़ी के गंगलोडों
के प्रतिमान हमारे पूर्वज ,
गीत संगीत सब बह गए सड़क आने के बाद
सडकों को इतना डरावना नहीं होना चाहिए
इंसान को गांवों को सड़कों से
और सड़कों को डरते हुए जंगल से दूर रखना चाहिए !
सड़कें इतनी निर्मम, कठोर और निष्ठुर होती होंगी
मैंने, सड़कों के इन क्रूर – चेहरों को कभी महसूस नहीं किया
और ना ही कल्पना की!
सड़कें–जंगलों को डराती हैं ये–सच है !

प्रस्तुति–
जगदम्बा प्रसाद मैठाणी,
पर्यावरणविद्

कार्यक्रम

हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्ष

'लेखक गांव सृजन सम्मान' से नवाजे पद्मभूषण राम बहादुर राय

हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने पर ग्राम थानों स्थित लेखक गांव के नालंदा पुस्तकालय परिसर में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष, विचारक व वरिष्ठ पत्रकार पद्मभूषण रामबहादुर राय को 'लेखक गांव सृजन सम्मान' से नवाजा गया। बतौर मुख्य अतिथि पद्मभूषण रामबहादुर राय ने कार्यक्रम का शुभारंभ कर अपने पत्रकारिता जीवन के अनुभव साझा करते हुए कहा कि हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने कई आयाम छुए। आज हिंदी को अनेक देशों में पढ़ाया जा रहा है,इसका निरंतर विस्तार हो रहा है। मीडिया में आए बदलाव, प्रतिस्पर्धा एवं व्यावसायिक पहलुओं पर उन्होंने चिंता जताई।उन्होंने सरकार से 'मीडिया काउंसिल' के गठन की आवश्यकता पर भी विचार करने को कहा। लेखक गांव की स्थापना की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि लेखक गांव स्वाधीन भारत का अंतराष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र बनेगा।लेखक गांव के संरक्षक पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री एवं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ.रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि हिंदी पत्रकारिता राष्ट्र की चेतना के साथ ही सांस्कृतिक धरोहरों एवं राष्ट्रीय आंदोलन की भी संवाहक है। हेमवती नंदन बहुगुणा केंद्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.प्रकाश सिंह ने कहा कि कागज और कलम में बड़ी ताकत होती है। उन्होंने शोध छात्रों से आह्वान किया कि जो भी शोध आलेख लिखें,वह आंकड़ों से युक्त हो,विश्वसनीय हो और सटीक हो। मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार जय सिंह रावत ने कहा कि मानव सभ्यता के विकास में पाषाण काल से मंगल ग्रह तक की यात्रा में मीडिया की अहम भूमिका रही है।

राज्य सूचना आयुक्त योगेश भट्ट ने कहा कि आज यह गौरव का क्षण है, हिंदी पत्रकारिता के बिना राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। सम्मान समारोह में डॉ.डी.आर.पुरोहित, डॉ.वेद प्रकाश,डॉ.सविता मोहन, लेखक गांव की निदेशक विदुषी निशंक, पद्मश्री प्रीतम भरतवाण, पद्मश्री डॉ.माधुरी बर्थवाल, पद्मश्री प्रेमचन्द शर्मा,अविकल थपलियाल, राकेश डोभाल व अरुण शर्मा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन साहित्यकार डॉ. सुशील उपाध्याय ने किया।

प्रस्तुति: अंकित तिवारी, उपसंपादक

कविता

बचपन की तो बात ही निराली थी

बचपन की तो बात ही निराली थी।
मिट्टी के घर, चारों तरफ हरियाली थी ।।
दिलों में भाई–बहनों के प्यार और मुँह पर गाली थी ।
हम भाई–बहन थे, फूल बगिया के और माँ उनकी माली थी ।।
याद है वो रसोई, जहाँ भाई–बहन की एक ही थाली थी ।
और ये प्यार तब था, जब जेबें हमारी खाली थीं ।।
बचपन की तो बात ही निराली थी ।
वो एक निवाले को दो टुकड़ों में बांटना
घर देर से आने पर भैया का डांटना
और डांट के बाद चलती अपनी मनमानी थी ।
बचपन की तो बात ही निराली थी ।
जब मासूम था बचपन, तो हर रिश्ता अनमोल था।
साफ थी नीयत, फिर कहाँ पैसे का कोई मोल था ।
किताबें भी एक दूसरे को देते थे, तब जमीनों के हिस्से कहाँ होते थे?
बचपन में तो सब हमारा था
तेरा–मेरा तो जवानी ने किया बंटवारा है ।
और ये सच्चाई बढ़ती उम्र के साथ आगे आने वाली थी ।
क्योंकि बचपन की तो बात ही निराली थी।।

प्रस्तुति–
एकता उपाध्याय
नर्सिंग प्रैक्टिशनर क्रिटिकल केअर, (एनपीसीसी)